हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा

HIN-527

क्षेयांक:02(30)

स्नातकोत्तर हिंदी

साईशा शिवदास पालयेकर

23P0140023

201901541

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

अनुक्रमणिका

क्रमाक	विषय	पृष्ट सख्या
1.	दैनिक रिपोर्ट	4
2.	शैक्षिक भ्रमण के विशिष्ट उद्देश्य,महत्त्व	5
3.	प्रस्तावना	6
4.	यात्रा की संक्षिप्त जानकारी	7
5.	अक्षरधाम मंदिर	9
6.	इंडिया गेट	13
7.	साहित्य, संगीत नाटक अकादमी	17
8.	लोटस टैंपल	23
9.	बिरला मंदिर	28
10.	हुमायूं का मकबरा	30
11.	दिल्ली विश्वविद्यालय	37
12.	हिंदू विश्वविद्यालय	39
13.	जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU)	42

14.	कुतुब मीनार	44
15.	उग्रसेन की बावली	56
16.	राजघाट	52
17.	गांधी दर्शन म्यूज़ियम	62
18.	जामा मस्जिद	65
19.	लाल किला	66
20.	राष्ट्रीय बाल भवन	58
21.	ताज महल	48
22.	मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि	52
23.	वृंदावन में कृष्ण मंदिर	54
24.	सरोजिनी नगर	68
25.	मेरा अनुभव	69
26.	निष्कर्ष	70

दैनिक रिपोर्ट

१८/०३/२४	टेन में बैठे
२०/०३/२४	दोपहर १२ बजे तक पहुंचे ३ बजे स्वामीनारायण अक्षरधाम के लिए निकले
२१/०३/२४	सुबह नाश्ता करके इंडिया गेट देखने गए, साहित्य एवं संगीत नाटक अकादमी, लोटस टैंपल, हुमायूं का मकबरा देखा।
२२/०३/२४	दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदू विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU), कुतुब मीनार देखा।
२३/०३/२४	आगरा में ताज महल, मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि, वृंदावन में कृष्ण मंदिर देखा।
२४/०३/२४	उग्रसेन की बावली, राष्ट्रीय बाल भवन, राजघाट, गांधी दर्शन म्यूजियम, लाल किला और सरोजिनी नगर गए।
२५/०३/२४	गोवा में आने के लिए टेन में बैठे।
२६/०३/२४	सुबह के ११ बजे गोवा में पहुंचे।

शैक्षिक भ्रमण के विशिष्ट उद्देश्य

- सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देना
- छात्रों को वास्तविक जीवन की स्थितियों से परिचित कराना
- सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देना
- कक्षा में सीखने को बढ़ाना
- विद्यार्थियों को अध्ययन-यात्रा के स्वरूप से परिचित कराना।
- क्षेत्र-विशेष के भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व से परिचित कराना।
- छात्रों में दल-निष्ठा, नेतृत्व क्षमता, साहस, आत्मविश्वास, अवलोकन और शोध-प्रवृत्ति को परखना एवं विकसित कराना।
- पुरातात्त्विक संदर्भ और साक्ष्य को एकत्र करना।

शैक्षिक भ्रमण का महत्त्व

- कौशल विकास और योग्यता निर्माण को बढ़ाना।
- स्थिति का आलोचनात्मक विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी का आत्म-विकास एवं आत्म-साक्षात्कार करना।
- क्षेत्र में अध्ययन-यात्रा कर वहाँ की भौगोलिक संरचना, ऐतिहासिक महत्त्व, परिवेश, लोक-जीवन, बोली-भाषा, खाद्य-संस्कृति, साहित्य, नृत्य, वास्तुकला, समस्याओं आदि का अध्ययन करना अपेक्षित है।
- अध्ययन दौरा अनुभवात्मक सीखने पर जोर देता है और समूह और स्व-निर्देशित दोनों गतिविधियों की पेशकश करता है जो शिक्षार्थियों को विभिन्न उद्योगों की संस्कृतियों, प्रथाओं और लोगों का पता लगाने में सक्षम बनाता है।

प्रस्तावना

शैक्षिक भ्रमण का शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष महत्व है। शैक्षिक भ्रमण से हम प्रकृति की सुन्दरता से रू-बू-रू होते हैं। मानव की सुन्दर कलाकृतियों से परिचित होते हैं, साथ ही साथ कुदरत की कुछ रहस्यों से भी परिचित होते हैं जिसमें हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। शैक्षिक भ्रमण में हम परोक्ष नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं, जिससे ज्ञान स्थायी होते हैं, साथ ही रासानुभूति की प्राप्ति होती है और नयन सुख की प्राप्ति होती है। यह मनोरंजन के माध्यम से सीखना शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम है।

हमारे महाविद्यालय से भी हम सभी द्वितीय वर्ष के छात्र-छात्राएँ लगभग एक सप्ताह के लिए दिनांक 17-26 मार्च को शैक्षणिक भ्रमण हेतु दिल्ली, आगरा ,मथुरा और वृन्दावन का दर्शन के लिए गए, जहाँ हमें दिल्ली में लोटस टेंपल, कुतुबमीनार, अक्षरधाम टेंपल, इंडिया गेट, साहित्य अकादमी, , लाल किला, राजघाट,हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली, हिंदू और जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय,जामा मस्जिद, राष्ट्रीय बाल भवन और सरोजिनी नगर।। आगरा में ताजमहल और मथुरा में कृष्णजम्न भूमी और वृंदावन मंदिर।

<u>शैक्षिक भ्रमण का संक्षेप मे रिपोर्ट</u>

17 मार्च 2024 तारीख को दोपहर दोपहर 2:00 बजे हम सब मड़गांव रेलवे स्टेशन पर निकल गए। हमें सर ने 2:00 बजे का समय बताया था लेकिन ट्रेन डिले होने के वजह से वह 4:00 बजे स्टेशन पर पहुँच गई। 4:00 बजे हम सब ट्रेन में बैठ गए और यहाँ से हमारा सफर शुरू हो गया 17 तारीख को हम ट्रेन में बैठे थे और 19 तारीख को हम दिल्ली पहुँच गए रास्ते में सफर के दौरान हमें बहुत मज़ा आया हमने दोपहर का खाना तो खा कर आए थे लेकिन रात में हमने एक साथ खाना खाया थोड़ी बात है कि और फिर हम सो गए एक रात बीत गई। तो सुबह जल्दी ही उठ गए सुबह का नाश्ता हमारा ट्रेन में हुआ और करते करते सुबह का समय बीत गया तो बीच बीच में कहीं कहीं स्टेशन पर उतर रहे थे ओर वहाँ का नजारा थोड़ा दूसरा ही था हमने बहुत सारे जगह को ट्रेन से ही देख लिया। करते 2 दिन बीत गए और तारीख सुबह 6:00 बजे हम अपने भ्रमण स्थान पर पहुँच गए जो हैं दिल्ली। ट्रेन से उतरकर स्टेशन पर मेट्रो स्टेशन के तरफ चले गए ।ऐसा हुआ कि हमें मेट्रो स्टेशन पर बहुत देर से रुकना पड़ा क्योंकि हमारा निवास स्थान जो है उसको बुक नहीं किया गया था होटल को तो सर होटल बुक करने के लिए चले गए तो लगभग १- 2 घंटे से ज्यादा हम उस मेट्रो स्टेशनों पर ही हमें ठहरना पड़ा इसके बाद बहुत देर बाद हमारा होटल बुक हुआ और हम होटल पर जाने के लिए सुबह 10:00 बजे ये बात मेट्रो स्टेशन से निकल गई तो बाहर जब हम तो होटल पर जाने के लिए हमने रिक्शा से सफर किया तो वो एक पहला अनुभव था दिल्ली के रिक्शा में बैठने का तो बहुत मज़ा आया और सभी 4-4 लोग हम एक एक रिक्शा में बैठकर होटल के तरफ चले गए ।लगभग 12:00 बजे हम होटल पहुँच गए। होटल में पहुंचने के बाद सर ने हमे कुछ सूचनाएं दी तथा 3-3 या 4-4 के ग्रुप में रूम दिये गए। रूम पर जाने के बाद हम फ्रेश हो गए और कुछ खाकर थोड़ा आराम किया। फिर उसी दिन अक्षर धाम मंदिर में चले गए ।अक्षरधाम जाते वक्त हमने मेट्रो में सफर किया और हम वहाँ पर पहुँच गए। और फिर हमने रात का खाना खाया आऔर हम हॉटेल लौट गए।

तो 20 मार्च 2024। हम सुबह उठकर नाश्ता वगैरह हमने सबने साथ में ही किया। और नाश्ता करने के बाद हम। इंडिया गेट देखने के लिए ही चले गए। तो इंडिया गेट देखने के लिए हमने बुक बस बुक की थी तो हम बस से ही सफर कर रहे थे। और फिर सुबह 9:00 बजे। हम इंडिया गेट पहुँच गए। उसके बाद हम साहित्य अकादमी में गए वहां पर हमें सहायता कदम के बारे में

परिचय किया गया उन्हें पुस्तकालय देखिए उनकी पूरी लाइब्रेरी करनी और वहां पर हमें साहित्य अकादमी के बारे में बहुत कुछ बताया गया इसके बाद नाटक संगीत अकादमी में हम गए और उसके बाद हम जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी में गए पर वहां हमें अंदर जाने के लिए हमें परेशान नहीं मिली इसलिए हम वहाँ नहीं जा पाए। तो इसके बाद लोटस टेम्पल में जाने के लिए निकले। लोटस टेम्पल के पास हमने खाना खाया और फिर हम लोटस टेम्पल में गए। लोटस टेम्पल का जो वातावरण था वह बहुत ही शांत था। इसके लोटस टेम्पल के बाद। हुमायूँ का मकबरा देखने के लिए गए। ओर वहाँ पर का हुमायूं का मकबरा और फिर ईर्सा खान का मकबरा भी देखा।और अंत में हमने बिरला मंदिर देखा और फिर हम होटल लौट गए। 21.03.2024 के दिन हम सवेरे उठे,नाश्ता किया और दिल्ली यूनिवर्सिटी के लिए निकल गए।और फिर जवाहरलाल नेहरू निवर्सिटी में गए, वहाँ पर मतदान चालू था। फिर वहाँ पर ही हमने दोपहर का खाना खाया। इसके बाद हम कुतुब मिनार देखने के लिए गए और कुतुब मिनार देखने के बाद हम होटल लौट गए।23.03.2024 के दिन हम सुबह उठकर 3:00 बजे आग्रा के लिए निकल गए।आग्रा में हमने ताजमहल देखा। और वहाँ हमने दोपहर का खाना खाया और बाद में हम मथुरा के लिए निकल गए तो मथुरा। मथुरा का दर्शन लेकर वृन्दावन चले गए तो वृन्दावन की गोली हमने खेली और उसके बाद हम फिर से होटल के लिए निकल गए सुबहत के 3:00 बजे हम होटल पहुँच गए।24.03.2024 के दिन सुबह नाश्ता किया और फिर हम अग्रसेन की बावली देखने के लिए निकले। वहाँ से हम अंतरराष्ट्रीय बाल भवन देखने के लिए गए। और उसके बाद हम राजघाट गए। और वहाँ पर ही एक म्यूजियम ता जिसका नाम था गाँधी दर्शन म्यूजियम। और म्यूजियम में हमें गांधीजी के बारे में बहुत सारी जानकारी मिली और फिर हमने लाल किला देखा । लाल किला देखने के बाद अंत में बाजार करने के लिए सरोजिनी नगर गए। 25.03.2024 के दिन सुबह 3:00 बजे हजरत निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन के लिए निकल गए। सुबह। 4:00 बजे हम ट्रेन में बैठ गए। 26.03.2024 हम घर पहुँच गए।

अक्षरधाम मंदिर

भारत के दिल में स्थित, नई दिल्ली, अक्षरधाम मंदिर वास्तुकला का एक चमत्कार है जो हजारों वर्षों की सांस्कृतिक विरासत को उजागर करता है और भगवान स्वामीनारायण (1781- 1830) को श्रद्धांजलि है जो हिंदू धर्म के अवतार, देवता और महान संत हैं । भव्य संरचना के निर्माण में लगभग 5 साल लग गए और 6 नवंबर, 2005 को इसका उद्घाटन किया गया। आज यमुना नदी के किनारे पर ढाँचा खड़ा है और दुनिया भर में लाखों पर्यटकों और तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है। मूल रूप से, अक्षरधाम शब्द को दो शब्दों 'अक्षर' से लिया गया है जिसका अर्थ है अनन्त और 'धाम' जिसका अर्थ है निवास, जिसका अर्थ है एक साथ परमात्मा या शाश्वत का निवास। मंदिर में प्रवेश करते हुए, कोई व्यक्ति भगवान स्वामीनारायण की 11 फीट ऊँची सोने की प्रतिमा को देख सकता था जो मंत्रमुग्ध कर देती है। आगंतुक आध्यात्मिकता से गूंजते हुए अक्षरधाम के प्रत्येक तत्व को महसूस कर सकते हैं जो हर आत्मा को संभावित रूप से दिव्य बनाता है। अक्षरधाम का प्रत्येक तत्व आध्यात्मिकता से गूंजता है मंदिर, प्रदर्शनियाँ और यहाँ तक कि उद्यान भी।

अक्षरधाम मंदिर में दो सौ से अधिक मूर्तियाँ हैं, जो कई सहस्राब्दियों से कई आध्यात्मिक दिग्गजों का प्रतिनिधित्व करती हैं। अक्षरधाम का आध्यात्मिक आधार यह है कि प्रत्येक आत्मा संभावित रूप से दिव्य है। चाहे हम परिवार की सेवा कर रहे हों, देश की, पड़ोसियों की या दुनिया भर के सभी जीवित प्राणियों की, प्रत्येक सेवा व्यक्ति को देवत्व की ओर बढ़ने में मदद कर सकती है। प्रत्येक प्रार्थना स्वयं को बेहतर बनाने और ईश्वर के करीब जाने का आह्वान है।

अक्षरधाम की यात्रा आध्यात्मिक रूप से समृद्ध अनुभव है। चाहे वह प्रार्थना की शक्ति को महसूस करने में हो, अहिंसा की ताकत को महसूस करने में हो, हिंदू धर्म के प्राचीन सिद्धांतों की सार्वभौमिक प्रकृति के बारे में जागरूक होने में हो, या सिर्फ पृथ्वी पर भगवान के निवास की सुंदरता की प्रशंसा करने में हो प्रत्येक तत्व का आध्यात्मिक महत्व है.

प्रदर्शनियाँ तीन बड़े हॉलों में प्रदर्शित की जाती हैं, जिनमें से प्रत्येक की प्रदर्शन शैली अनूठी है। शिक्षा, सूचना और प्रेरणा का स्रोत, वे कला, विज्ञान, संस्कृति और आध्यात्मिकता का चार गुना संयोजन हैं। कलात्मक रूप से मंत्रमुग्ध करने वाली, वैज्ञानिक रूप से आश्चर्यजनक, सांस्कृतिक रूप से प्रेरक और आध्यात्मिक रूप से उन्नत, प्रदर्शनियाँ अद्भुत वातावरण बनाती हैं जो दर्शकों को प्राचीन भारत में ले जाने में सक्षम हैं। प्राचीन मूल्यों और ज्ञान तथा सर्वोत्तम आधुनिक मीडिया

और प्रौद्योगिकी का एक संतुलित मिश्रण, प्रदर्शनियाँ हिंदू विरासत और सार्वभौमिक मूल्यों का एक शक्तिशाली, आत्मा-उत्तेजक अनुभव प्रदान करती हैं। तीन हॉल हैं: सहजानंद दर्शन मूल्यों का हॉल; नीलकंठ दर्शन बड़े प्रारूप की फिल्म; संस्कृति दर्शन - सांस्कृतिक नाव की सवारी।

अक्षरधाम मंदिर नारायण सरोवर से घिरा हुआ है, जो एक झील है और इसमें भारत में 151 झीलों से पानी लाया जाता है। झीलों के किनारे गायों के 108 चेहरे बनाए गए हैं, जो 108 हिंदू देवताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसमें परिक्रमा के लिए 3,000 फीट लंबा परिक्रमा पथ है, जो राजस्थान से लाए गए लाल पत्थरों से बना है। इसमें दो मंजिला इमारत भी है, जिसमें 1,152 खंभे और 145 खिड़कियां हैं। यह परिक्रमा मंदिर के चारों ओर एक सुंदर माला की तरह फैली हुई है

अक्षरधाम मंदिर परिसर में कमल के आकार का एक उत्कृष्ट उद्यान भी है और इसलिए इसे लोटस गार्डन के नाम से भी जाना जाता है। ऊपर से देखने पर यह बड़े पत्थरों से बने कमल जैसा दिखता है, जिस पर शेक्सपियर, मार्टिन लूथर, स्वामी विवेकानंद और अन्य प्रतिष्ठित हस्तियों के उद्धरण उकेरे गए हैं।

अक्षरधाम मंदिर के बारे में एक और दिलचस्प तथ्य यह है कि इसमें 10 द्वार हैं, जो वैदिक साहित्य के अनुसार 10 दिशाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये द्वार बताते हैं कि सभी दिशाओं से अच्छाई आती रहेगी।

अक्षरधाम मंदिर परिसर में **यज्ञपुरुष कुंड है,** जो दुनिया का सबसे बड़ा यज्ञ कुंड है। इसमें 108 छोटे मंदिर और कुंड तक जाने वाली 2870 सीढ़ियां शामिल हैं। इस भव्य मंदिर को **गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड** में जगह मिल चुकी है । **17 दिसंबर, 2007** को अंतर्राष्ट्रीय संगठन द्वारा अक्षरधाम मंदिर को विश्व का सबसे बड़ा व्यापक हिंदू मंदिर घोषित किया गया था।

मंदिर के परिसर में हरे-भरे लॉन हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से **गार्डन ऑफ इंडिया या भारत उपवन के नाम से जाना जाता है** । ये लॉन भारत की महान और महाकाव्य हस्तियों की कांस्य मूर्तियों से सजाए गए हैं। ये शख्सियतें कोई दैवीय विभूतियां नहीं, बल्कि वास्तविक जीवन के नायक हैं।

इस खूबसूरत मंदिर का भव्य **संगीतमय फव्वारा शो** दर्शकों के लिए आकर्षण का केंद्र है, जिसे सर्कल ऑफ लाइफ के नाम से जाना जाता है, जिसका हर शाम 15 मिनट का शानदार प्रदर्शन होता है। यह शो जन्म से मृत्यु तक जीवन के चक्र को दर्शाता है।

"संस्कृतिक विहार" एक नाव की सवारी है, जिसका उपयोग पर्यटक प्राचीन भारत की संस्कृति और इतिहास को देखने के लिए करते हैं। यह मॉडल प्राचीन भारत के विश्वविद्यालयों, बाजारों और सभ्यता को प्रदर्शित करता है।

अक्षरधाम मंदिर रात के समय बहुत खूबसूरत दिखता है। यहां प्रति सप्ताह लगभग **100,000** आगंतुक आते हैं और लगभग 850 स्वयंसेवक प्रतिदिन यहां काम करते हैं।

यह कहना गलत नहीं होगा कि अक्षरधाम मंदिर दिल्ली शहर का एक महत्वपूर्ण स्थल है और घूमने के लिए एक खूबसूरत जगह है।

प्रवेश निषेध
NO ENTRY
GATE 1
SWAMINARAYAN
AKSHARDHAM

इंडिया गेट

इंडिया गेट दिल्ली का ही नहीं अपितु भारत का महत्वपूर्ण स्मारक है। इंडिया गेट को 80,000 से अधिक भारतीय सैनिकों की याद में निर्मित किया गया था जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में वीरगति पाई थी। यह स्मारक 42 मीटर ऊंची आर्च से सज्जित है और इसे प्रसिद्ध वास्तुकार एडविन ल्यूटियन्स ने डिज़ाइन किया था। इंडिया गेट को पहले अखिल भारतीय युद्ध स्मृति के नाम से जाना जाता था। इंडिया गेट की डिज़ाइन इसके फ्रांसीसी प्रतिरूप स्मारक आर्क- डी-ट्रायोम्फ के समान है।

यह इमारत लाल पत्थर से बनी है जो एक विशाल ढांचे के मंच पर खड़ी है। इसके आर्च के ऊपर दोनों ओर 'इंडिया' लिखा है। इसकी दीवारों पर 70,000 से अधिक भारतीय सैनिकों के नाम शिल्पित किए गए हैं, जिनकी याद में इसे बनाया गया है। इसके शीर्ष पर उथला गोलाकार बाउलनुमा आकार है जिसे विशेष अवसरों पर जलते हुए तेल से भरने के लिए बनाया गया था।

इंडिया गेट जिन सैनिकों की याद में बनाया गया था उनके नाम इस इमारत पर खुदे हुए हैं। इंडिया गेट की नींव 1921 में ड्यूक ऑफ़ कनॉट ने रखी थी और इसे कुछ साल बाद तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन ने राष्ट्र को समर्पित किया था। इंडिया गेट दिल्ली की महत्त्वपूर्ण इमारत है। दिल्ली आने वाले पर्यटक यहाँ अवश्य आते हैं।

शहीद सैनिकों की स्मृति में यहाँ एक राइफ़ल के ऊपर सैनिक की टोपी रखी गयी है जिसके चार कोनों पर सदैव 'अमर जवान ज्योति' जलती रहती है। इसकी दीवारों पर उन हज़ारों शहीद सैनिकों के नाम हैं।

भारतीय सेनाओं के शहीदों के लिए, जो फ्रांस और फ्लैंडर्स मेसोपोटामिया, फारस, पूर्वी अफ्रीका गैलीपोली और निकटपूर्व एवं सुदूरपूर्व की अन्य जगहों पर शहीद हुए, और उनकी पवित्र स्मृति में भी जिनके नाम दर्ज हैं और जो तीसरे अफ़ग़ान युद्ध में भारत में या उत्तर-पश्चिमी सीमा पर मृतक हुए।

इसके आस पास हरे भरे मैदान, बच्चों का उद्यान और प्रसिद्ध बोट क्लब इसे एक उपयुक्त पिकनिक स्थल बनाते हैं। इंडिया गेट के फव्वारे के पास बहती शाम की ठण्डी हवा ढेर सारे दर्शकों को यहाँ आकर्षित करती है। शाम के समय इंडिया गेट के चारों ओर लगी रोशनियों से इसे प्रकाशमान किया जाता है जिससे एक भव्य दृश्य बनता है। स्मारक के पास खड़े होकर राष्ट्रपति

भवन का नज़ारा लिया जा सकता है। सुंदरतापूर्वक रोशनी से भरे हुए इस स्मारक के पीछे काला होता **आकाश** इसे एक यादगार पृष्ठभूमि प्रदान करता है। **दिन** के **प्रकाश** में भी इंडिया गेट और **राष्ट्रपति भवन** के बीच एक मनोहारी दृश्य दिखाई देता है।

हर वर्ष 26 जनवरी को इंडिया गेट गणतंत्र दिवस की परेड का गवाह बनता है। जहाँ आधुनिकतम रक्षा प्रौद्योगिकी के उन्नयन का प्रदर्शन किया जाता है। यहाँ आयोजित की जाने वाली परेड भारत देश की रंगीन और विविध सांस्कृतिक विरासत की झलक भी दिखाती है, जिसमें देश भर से आए हुए कलाकार इस अवसर पर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

गेट पर और उसके आसपास कई समारोह और अनुष्ठान होते हैं। चूंकि यह गेट शहर की औपचारिक धुरी पर है, इसलिए कई जुलूस और परेड इसके पास से गुजरते हैं। लोग गेट के सामने पुष्पांजलि अर्पित करते हैं, और भारतीय गणतंत्र दिवस पर इंडिया गेट और आसपास के स्मारकों पर शहीद सैनिकों के सम्मान में सैन्य जुलूस निकलते हैं। छुट्टियों के दिन इंडिया गेट भी रंगीन रोशनी से जगमगाएगा। नए साल और अन्य भारतीय त्योहार अक्सर गेट पर मनाए जाते हैं।

इंडिया गेट पर अक्सर नागरिक प्रदर्शन और विरोध प्रदर्शन होते रहते हैं। विरोध कई चीजों को लेकर हो सकता है, जिसमें कानून में भ्रष्टाचार, न्याय की कमी, संसाधनों के सरकारी प्रबंधन से नाराजगी और हाल ही में पवित्र स्थलों को पर्यटक स्थलों के रूप में सूचीबद्ध किया जाना शामिल है। चूँकि यह इकट्ठा होने के लिए जगह वाला एक बड़ा खुला क्षेत्र है, यह लोगों के विरोध प्रदर्शन के लिए एक प्राकृतिक सभा स्थल के रूप में कार्य करता है।

इंडिया गेट के परिसर पर ही तब के सम्राट ग्रेट जॉर्ज वी की प्रतिमा भी लगी थी। कुछ विवादों की वजह से उस प्रतिमा को वहां से हटा कर अन्य प्रतिमाओं के साथ जो उस समय से संबंद्ध रखते हैं, उनके साथ कोरोनेशन पार्क में स्थापित कर दिया गया।

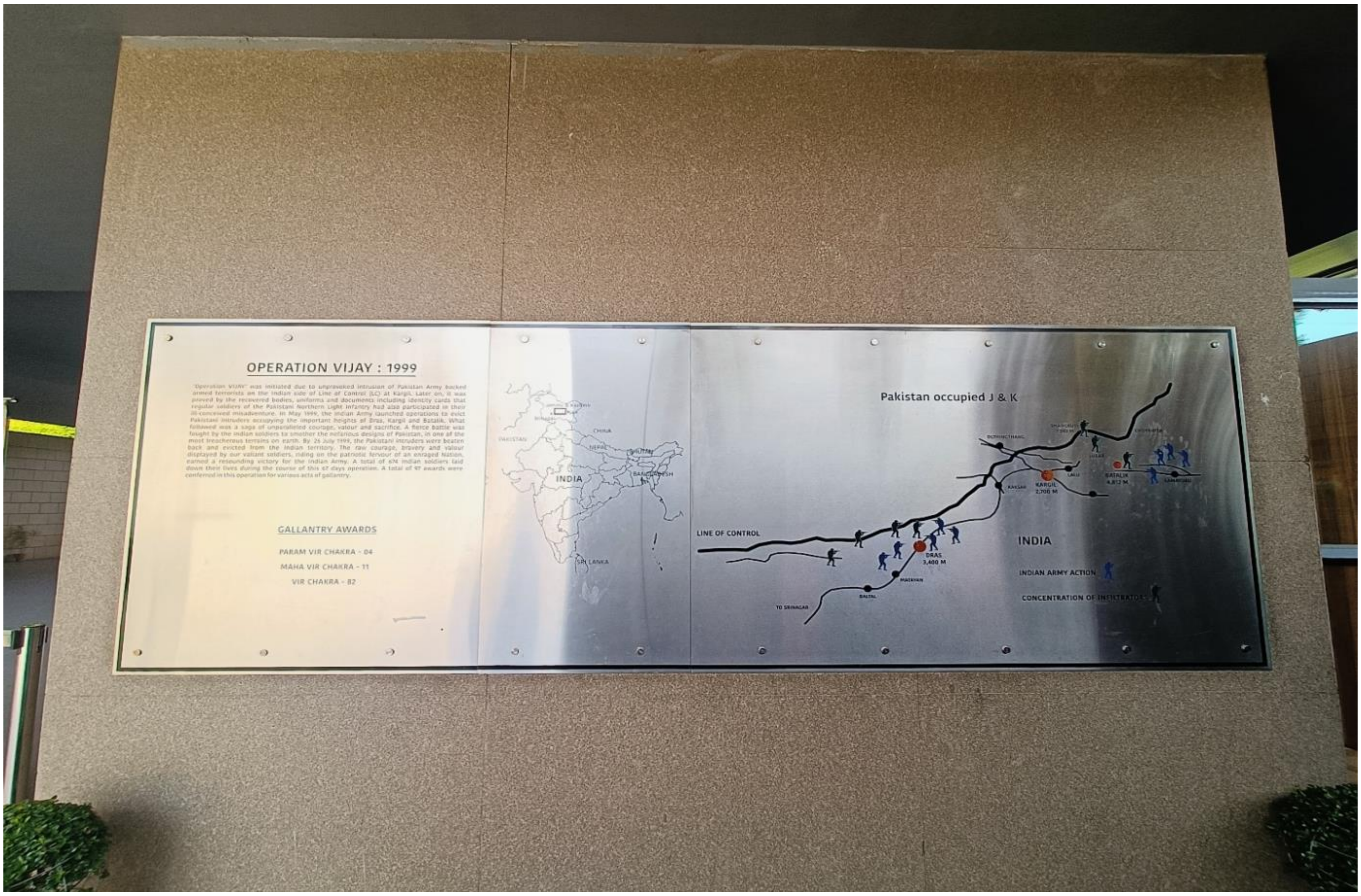

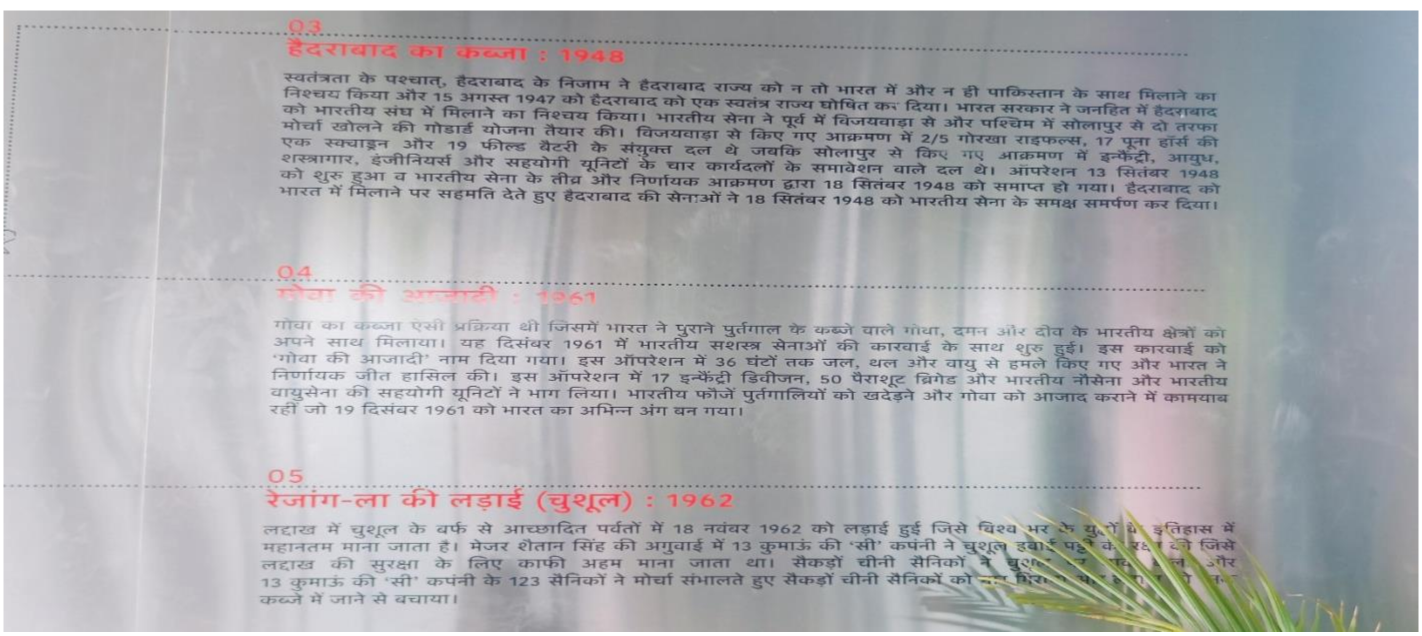

03
हैदराबाद का कब्जा : 1948

स्वतंत्रता के पश्चात्, हैदराबाद के निजाम ने हैदराबाद राज्य को न तो भारत में और न ही पाकिस्तान के साथ मिलाने का निश्चय किया और 15 अगस्त 1947 को हैदराबाद को एक स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया। भारत सरकार ने जनहित में हैदराबाद को भारतीय संघ में मिलाने का निश्चय किया। भारतीय सेना ने पूर्व में विजयवाड़ा से और पश्चिम में सोलापुर से दो तरफा मोर्चा खोलने की गोडार्ड योजना तैयार की। विजयवाड़ा से किए गए आक्रमण में 2/5 गोरखा राइफल्स, 17 पूना हॉर्स की एक स्क्वाड्रन और 19 फील्ड बैटरी के संयुक्त दल थे जबकि सोलापुर से किए गए आक्रमण में इन्फैंट्री, आयुध, शस्त्रागार, इंजीनियर्स और सहयोगी यूनिटों के चार कार्यदलों के समावेशन वाले दल थे। ऑपरेशन 13 सितंबर 1948 को शुरु हुआ व भारतीय सेना के तीव्र और निर्णायक आक्रमण द्वारा 18 सितंबर 1948 को समाप्त हो गया। हैदराबाद को भारत में मिलाने पर सहमति देते हुए हैदराबाद की सेनाओं ने 18 सितंबर 1948 को भारतीय सेना के समक्ष समर्पण कर दिया।

04
गोवा की आजादी : 1961

गोवा का कब्जा ऐसी प्रक्रिया थी जिसमें भारत ने पुराने पुर्तगाल के कब्जे वाले गोवा, दमन और दीव के भारतीय क्षेत्रों को अपने साथ मिलाया। यह दिसंबर 1961 में भारतीय सशस्त्र सेनाओं की कारवाई के साथ शुरु हुई। इस कारवाई को 'गोवा की आजादी' नाम दिया गया। इस ऑपरेशन में 36 घंटों तक जल, थल और वायु से हमले किए गए और भारत ने निर्णायक जीत हासिल की। इस ऑपरेशन में 17 इन्फैंट्री डिवीजन, 50 पैराशूट ब्रिगेड और भारतीय नौसेना और भारतीय वायुसेना की सहयोगी यूनिटों ने भाग लिया। भारतीय फौजें पुर्तगालियों को खदेड़ने और गोवा को आजाद कराने में कामयाब रहीं जो 19 दिसंबर 1961 को भारत का अभिन्न अंग बन गया।

05
रेजांग-ला की लड़ाई (चुशूल) : 1962

लद्दाख में चुशूल के बर्फ से आच्छादित पर्वतों में 18 नवंबर 1962 को लड़ाई हुई जिसे विश्व भर के [illegible] इतिहास में महानतम माना जाता है। मेजर शैतान सिंह की अगुवाई में 13 कुमाऊं की 'सी' कपंनी ने चुशूल [illegible] की जिसे लद्दाख की सुरक्षा के लिए काफी अहम माना जाता था। सैकड़ों चीनी सैनिकों ने [illegible] और 13 कुमाऊं की 'सी' कपंनी के 123 सैनिकों ने मोर्चा संभालते हुए सैकड़ों चीनी सैनिकों को [illegible] कब्जे में जाने से बचाया।

साहित्य अकादेमी

भारत की स्वतंत्रता के भी काफ़ी पहले से देश की ब्रिटिश सरकार के पास भारत में साहित्य की राष्ट्रीय संस्था की स्थापना का प्रस्ताव विचाराधीन था। 1944 में, भारत सरकार ने रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ़ बंगाल का यह प्रस्ताव सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया था कि सभी क्षेत्रों में सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय सांस्कृतिक ट्रस्ट का गठन किया जाना चाहिए। ट्रस्ट के अंतर्गत साहित्य अकादेमी सहित तीन अकादेमियाँ थीं। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत की स्वतंत्र सरकार द्वारा प्रस्ताव का अनुसरण करते हुए विस्तृत रूपरेखा तैयार करने के लिए शृंखलाबद्ध बैठकें बुलाई गईं। सर्वसम्मति से तीन राष्ट्रीय अकादेमियों के गठन का निर्णय हुआ, एक साहित्य के लिए दूसरी दृश्यकला तथा तीसरी नृत्य, नाटक एवं संगीत के लिए। लेकिन विचारों में यह मतभेद हुआ कि सरकार को ज़रूरी कदम उठाते हुए अकादेमियों की स्थापना करनी चाहिए अथवा इसे उन व्यक्तियों के लिए ठहरना चाहिए, जो अकादेमियों की स्थापना के लिए आवश्यक नैतिक प्राधिकारी हैं। संघ के शिक्षामंत्री अब्दुल कलाम आज़ाद का विचार था कि "यदि हमने अकादेमी के लिए नीचे से इसके विकास की प्रतीक्षा की तो शायद यह कभी स्थापित नहीं हो पाएगी।" यह महसूस किया गया कि सरकार के पास अकादेमियों के गठन के लिए पहलकदमी के सिवा कोई विकल्प नहीं है। सरकार द्वारा इस प्रक्रिया में किया जाने वाला कार्य परदा उठाने की तरह था। सरकार ने अकादेमियों का गठन किया, लेकिन जब एक बार वे गठित हो गईं, तब वे किसी नियंत्रण में नहीं रहीं और उन्हें स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करने के लिए छोड़ दिया गया। भारत सरकार ने संकल्प सं. दिनांक दिसंबर 1952 के माध्यम से साहित्य अकादेमी नामक राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था की स्थापना का निर्णय लिया। साहित्य अकादेमी का विधिवत् उद्धाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है- भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करनेवाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालाँकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का पंजीकरण 7 जनवरी 1956 को किया गया।

अकादेमी प्रत्येक वर्ष अपने द्वारा मान्यता प्रदत्त चौबीस भाषाओं में साहित्यिक कृतियों के लिए पुरस्कार प्रदान करती है, साथ ही इन्हीं भाषाओं में परस्पर साहित्यिक अनुवाद के लिए भी पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। ये पुरस्कार साल भर चली संवीक्षा, परिचर्चा और चयन के बाद घोषित किए जाते हैं। अकादेमी उन भाषाओं के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वालों को 'भाषा सम्मान' से विभूषित करती है, जिन्हें औपचारिक रूप से साहित्य अकादेमी की मान्यता प्राप्त नहीं है। यह सम्मान 'क्लासिकल एवं मध्यकालीन साहित्य' में किए गए योगदान के लिए भी दिया जाता है। अकादेमी प्रतिष्ठित लेखकों को महत्तर सदस्य और मानद महत्तर सदस्य चुनकर सम्मानित करती है। आनंद कुमारस्वामी और प्रेमचंद के नाम से एक 'फ़ेलोशिप' की स्थापना भी की गई है। अकादेमी ने बेंगलूरु, अहमदाबाद, कोलकाता और दिल्ली में अनुवाद-केन्द्र और दिल्ली में भारतीय साहित्य अभिलेखागार का प्रवर्तन किया है। नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी कैम्पस, शिलाँग में जनजातीय और वाचिक साहित्य परियोजना के प्रवर्तन के लिए एक परियोजना कार्यालय स्थापित किया गया था। वर्तमान में यह कार्यालय अगरतला में स्थानांतरित कर दिया गया है तथा और भी कई कल्पनाशील परियोजनाएँ बनाई जा रही हैं। साहित्य अकादेमी को सांस्कृतिक और भाषाई विभिन्नताओं का ज्ञान है और वह स्तरों एवं प्रवृत्तियों को ध्वस्त कर कृत्रिम मानकीकरण में विश्वास नहीं करती; साथ ही वह गहन अंत:सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्रयोगात्मक सूत्रों के बारे में जागरूक है, जो भारत के साहित्य की विविध अभिव्यक्तियों को एकसूत्रता प्रदान करते हैं। विश्व के विभिन्न देशों के साथ यह एकता अकादेमी के सांस्कृतिक विनिमय के कार्यक्रमों द्वारा वैश्विक स्तर पर एक अंतरराष्ट्रीय प्रजातिगत आयाम की खोज करती है।

अकादेमी की चरम सत्ता एक निन्यानवे सदस्यीय परिषद् (सामान्य परिषद्) में न्यस्त है, जिसका गठन निम्नांकित ढंग से होता है : अध्यक्ष, वित्तीय सलाहकार, भारत सरकार द्वारा मनोनीत पाँच सदस्य, भारत सरकार के राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों के पैंतीस प्रतिनिधि, साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं के चौबीस प्रतिनिधि, भारत के विश्वविद्यालयों के बीस प्रतिनिधि, साहित्य-क्षेत्र में अपने उत्कर्ष के लिए परिषद् द्वारा निर्वाचित आठ व्यक्ति एवं संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, भारतीय प्रकाशक संघ और राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन के एक-एक प्रतिनिधि।

साहित्य अकादेमी की व्यापक नीति और उसके कार्यक्रम के मूलभूत सिद्धांत परिषद् द्वारा निर्धारित किए जाते हैं और उन्हें कार्यकारी मंडल के प्रत्यक्ष निरीक्षण में क्रियान्वित किया जाता

है। प्रत्येक भाषा के लिए परामर्श मंडल है, जिसके सदस्य प्रसिद्ध लेखक और विद्वान होते हैं और उन्हीं के परामर्श पर तत्संबंधी भाषा का विशिष्ट कार्यक्रम नियोजित एवं कार्यान्वित होता है।

परिषद् का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है। वर्तमान परिषद् अकादेमी की स्थापना के बाद चौदहवीं है और इसकी प्रथम बैठक 2018 में संपन्न हुई। अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले कार्यकारी मंडल के सदस्यों और वित्त समिति के लिए सामान्य परिषद् के एक प्रतिनिधि का निर्वाचन परिषद् द्वारा किया जाता है। विभिन्न भाषाओं के परामर्श मंडल कार्यकारी मंडल द्वारा नियुक्त किए जाते हैं।

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फरवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फरवरी 1973 में वह परिषद् द्वारा पुनः अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के.आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फरवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फरवरी 1983 में प्रो. वी. के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फरवरी 1988 में डॉ. बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008-2012 के लिए पुनर्गठित सामान्य परिषद द्वारा श्री सुनील गंगोपाध्याय को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया। अक्तूबर 2012 में श्री गंगोपाध्याय के निधन के पश्चात प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को प्रभारी अध्यक्ष नियुक्त किया गया। 18 फरवरी 2013 को संपन्न पुनर्गठित सामान्य परिषद द्वारा प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को 2013-2017 के लिए अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया। 2018 को संपन्न पुनर्गठित सामान्य परिषद् द्वारा प्रो. चंद्रशेखर कंबार को 2018–2022 के लिए अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया।

साहित्य अकादमी लेखकों को चुनकर सर्वोच्च सम्मान अपनी 'मानद उपाधि' देती है। यह सम्मान अमर साहित्यकारों के लिए सुरक्षित है तथा एक बार में 21 लोगों को दिया जाता है। अकादमी 850 लेखकों और 283 अनुवादकों को साहित्य तथा अनुवाद के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के

लिए सम्मानित कर चुकी है और 21 भाषा सम्मान दिए जा चुके हैं। जिनका उद्देश्य क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहन देना है। साथ ही भारतीय साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वाले विदेशी विद्वानों को मानद उपाधि प्रदान की गई है। साहित्य अकादमी पुरस्कार हिन्दी के विद्वान साहित्यकारों को दिया जा चुका है।

साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है। जिनमें पुरस्कृत कृतियों का अनुवाद, भारतीय साहित्य के महान् लेखकों के मोनोग्राफ, साहित्य का इतिहास, अनुवाद में महान् भारतीय और विदेशी रचनाएं, उपन्यास, कविता और गद्य, आत्मकथाएं, अनुवादकों का रजिस्टर, भारतीय लेखकों के बारे में जानकारी (कौन, क्या है) भारतीय साहित्य की राष्ट्रीय संदर्भ सूची और भारतीय साहित्य का विश्वकोष शामिल है।

साहित्य अकादमी का प्रधान कार्यालय अथवा मुख्यालय रवीन्द्र भवन, 35 फीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली में स्थित है। यह भव्य भवन रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ- संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी और साहित्य अकादमी स्थित हैं। यह कार्यालय डोगरी, अंग्रेज़ी, हिन्दी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संथाली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है और इन भाषाओं के संदर्भ में क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में कार्य करता है।

अकादमी की तीन पत्रिकाएं हैं-अंग्रेज़ी में द्विमासिक 'इंडियन लिटरेचर', हिन्दी द्विमासिक 'समकालीन भारतीय साहित्य' और संस्कृत छमाही पत्रिका 'संस्कृत प्रतिभा'। अकादमी द्वारा दो पुस्तक मालाओं - 'भारत की विभिन्न भाषाओं के साहित्य का इतिहास' तथा 'भारतीय साहित्य के निर्माता' का भी प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है। इसमें प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक के देश भर के श्रेष्ठ रचनाकारों का संक्षिप्त जीवन - परिचय और साहित्य का मूल्यांकन प्रस्तुत करने की योजना है। अकादमी हर वर्ष औसतन 250 से 300 पुस्तकें प्रकाशित करती है। इसकी कई विशेष परियोजनाएं भी हैं। जैसे - प्राचीन भारतीय साहित्य, मध्यकालीन भारतीय साहित्य, और आधुनिक भारतीय साहित्य और पांच सहस्राब्दियों के दस सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ। अकादमी ने 'भारतीय काव्यशास्त्र का विश्वकोश' तैयार करने की नई परियोजना भी शुरू की है, जिसमें अकादमी 22 मान्यताप्राप्त भाषाओं के 1000 से भी अधिक लेखकों की सहायता से भारतीय साहित्य का एक विस्तृत विश्वकोष तैयार कर रही है।

अकादमी साहित्य के इतिहास एवं सौंदर्यशास्त्र जैसे विभिन्न विषयों पर हर वर्ष अनेक क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन करती है। साथ ही नियमित रूप से अनुवाद कार्यशालाएं भी लगाई जाती हैं।

अकादमी हर वर्ष, सामान्यत: फ़रवरी के महीने में, सप्ताह भर का साहित्योत्सव आयोजित करती है। जिसमें पुरस्कार वितरण समारोह, संवत्सर भाषण माला और राष्ट्रीय संगोष्ठी शामिल रहती है

अकादमी द्वारा श्रेष्ठ महिला साहित्य सर्जकों को चुनकर उन्हें फैलोशिप प्रदान की जाती है तथा प्रतिवर्ष अंग्रेज़ी सहित 23 भाषाओं के सर्वश्रेष्ठ लेखकों को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित करती है। अकादमी ने स्वर्ण जयंती समारोहों के अंतर्गत 2004-05 में 'सूर साहित्य' विषय से कार्यक्रमों की नई श्रृंखला भी आरंभ की है।

नेपाली

New Delhi, Delhi, India
35, Copernicus Marg, New Delhi, Delhi 110001, India
Lat 28.624416° Long 77.230277°
21/03/24 12:54 PM GMT +05:30
Photo Credits : Aditya Sinai Bhangui
221 m
145° SE
Google

संगीत नाटक अकादमीचाहे

वह प्रसिद्ध नगाड़ा हो या मानव हड्डी से बना कोई वाद्ययंत्र, संगीत नाटक अकादमी की संगीत वाद्ययंत्र गैलरी में भारत की संगीत विरासत के कुछ सबसे बड़े और अल्पज्ञात रत्न मौजूद हैं। संग्रहालय में व्यवस्थित संग्रह के माध्यम से प्राप्त किए गए उपकरणों की एक सावधानीपूर्वक एकत्रित श्रृंखला, साथ ही अकादमी में आने वाले संगीतकारों के उपहार भी शामिल हैं।

संगीत वाद्ययंत्रों की गैलरी, जिसे 'असावरी' (स्वर्ग की आत्मा) भी कहा जाता है, का उद्घाटन 1964 में प्रसिद्ध वायलिन वादक लॉर्ड येहुदी मेनुहिन द्वारा किया गया था। इस संग्रह का अधिकांश अधिग्रहण 1968 में दिल्ली में आयोजित संगीत वाद्ययंत्रों की एक प्रदर्शनी के बाद हुआ। तब से, संग्रह से संगीत वाद्ययंत्रों की कई प्रदर्शनियाँ भारत और इटली (रोम), रूस (मास्को) सहित अन्य देशों में आयोजित की गई हैं।), ग्रीस (एथेंस), मिस्र (अलेक्जेंड्रिया), स्पेन, दक्षिण कोरिया, आदि।

संगीत वाद्ययंत्रों की गैलरी की मुख्य विशेषताएं

लगभग 600 संगीत वाद्ययंत्रों के संग्रह में से 200 से अधिक को संग्रहालय में स्थायी प्रदर्शन के लिए रखा गया है। प्रदर्शनी में रखे गए उपकरण प्राचीन काल से भारत में अपनाए जाने वाले चार-स्तरीय वर्गीकरण का प्रतिनिधित्व करते हैं, अर्थात् तंतु वाद्य (कॉर्डोफोन्स), सुशिर वाद्य (एयरोफोन्स), घन वाद्य (इडियोफोन्स) और अवनद्ध वाद्य (मेम्ब्रानोफोन्स)।

गैलरी में ताल वाद्ययंत्रों का चयन विशेष रूप से दिलचस्प है क्योंकि इसमें प्रदर्शन का एक बड़ा और विविध खंड शामिल है। जबकि अधिक परिचित वाद्ययंत्र स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हैं, इसमें कछवा सितार (उत्तर भारत) और गेट्टू वाद्यम (तमिलनाडु) सहित दुर्लभ वाद्ययंत्रों का संग्रह भी है। युगों-युगों से भारत की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को परिभाषित करते हुए, यहां सात उपकरण दिए गए हैं जिन्हें आपको इस गैलरी में अपनी अगली यात्रा पर अवश्य देखना चाहिए!

एक अलग प्रकृति का इतिहास एक संग्रहालय में रहता है जिसमें भारत की पुरानी संगीत परंपराओं के खोए हुए खजाने हैं। मध्य दिल्ली के फ़िरोज़ शाह रोड पर स्थित, रवीन्द्र भवन, संगीत नाटक अकादमी (एसएनए) में संगीत वाद्ययंत्रों की गैलरी न केवल देश के समृद्ध संगीत इतिहास की याद दिलाती है, बल्कि इसकी लुप्त होती लोक विरासत की भी याद दिलाती है।

एसएनए, संगीत, नृत्य और नाटक के लिए भारत की राष्ट्रीय अकादमी, भारत में प्रदर्शन कला को संरक्षित और बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1952 में स्थापित की गई थी। अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए, एसएनए संग्रहालय का रखरखाव करता है जो देश के विभिन्न क्षेत्रों के प्रदर्शन कलाओं के साथ-साथ संगीत वाद्ययंत्रों की समृद्ध विरासत और विरासत को प्रदर्शित करता है।

अपनी तरह के अनूठे संग्रहालय का उद्घाटन 1964 में प्रसिद्ध वायलिन वादक येहुदी मेनुहिन द्वारा किया गया था और पद्धतिगत संग्रह 1968 में अकादमी द्वारा दिल्ली में लगभग 400 लोक और आदिवासी संगीत वाद्ययंत्रों की एक प्रदर्शनी आयोजित करने के साथ शुरू हुआ था। संगीतकारों और उनके परिवारों द्वारा दान किए गए कुछ उपकरणों सहित, तब से नियमित रूप से अधिग्रहण किया गया है।

हालांकि एसएनए के पास 2,000 से अधिक स्वदेशी संगीत वाद्ययंत्र, मुखौटे, कठपुतलियाँ और हेडगियर हैं, केवल 250 ही स्थायी प्रदर्शन पर हैं, जबकि बाकी जगह की कमी के कारण भंडारण सुविधा में रखे गए हैं।

वाद्ययंत्र संगीत की विभिन्न धाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्हें बांसुरी और नागस्वरम सहित पवन वाद्य यंत्रों या एरोफोनिक के रूप में वर्गीकृत किया गया है; स्ट्रिंग वाद्ययंत्र, या कॉर्डोफ़ोनिक, जिसमें दिलरुबा और वीणा शामिल हैं; तबला और मृदंगम सहित ताल वाद्ययंत्र, या मेम्ब्रेनोफोनिक, और बोर्टल और घाटम सहित इडियोफोनिक।

समय-समय पर, इन उपकरणों की कई प्रदर्शनियाँ भारत और अन्य देशों में आयोजित की गई हैं, जिनमें से सबसे उल्लेखनीय हांगकांग, इटली, रूस, ग्रीस, मिस्र, स्पेन और दक्षिण कोरिया में हैं।

कस्बों और गांवों से प्राप्त किए गए अधिकांश उपकरण विदेशी प्राचीन वस्तुएं प्रतीत होते हैं, जिन पर किसी की नजर कभी नहीं पड़ी होगी। नाम भी उतने ही अस्पष्ट हैं. उदाहरण के लिए: सितार सितार नहीं है, बल्कि एक आदिवासी कॉर्डोफोन है, गौरी कलाम ("कलम" का हिंदी में अर्थ है कलम) वास्तव में एक तुरही है और दावंडी, एक मेम्ब्रानोफोन, पीतल का एक घंटे के गिलास के आकार का छोटा ड्रम है।

फिर तेनकाया बुर्रा, एक तार वाद्ययंत्र, और मकर यज़, जो अब विलुप्त हो चुका वाद्ययंत्र है, जैसे आइटम हैं। दुर्लभ वाद्ययंत्रों में उत्तर भारत का कछवा सितार और तमिलनाडु का गेट्टू वाद्यम शामिल हैं।

हालाँकि, दुख की बात है कि बहुत से लोग एसएनए में आते हैं, लेकिन बहुत कम लोग गैलरी या इस तथ्य के बारे में जानते हैं कि अभिलेखीय टीम ने 40 वर्षों की अवधि में इन उपकरणों को एकत्र किया था।

Sahi Jatra Masks

CENTENARY GATE
JAMIA MILLIA ISLAMIA
सेंटेनरी गेट

लोटस टेंपल

भारतीय परंपराओं में कमल को शांति और पवित्रता के सूचक और ईश्वर के अवतार के रूप में देखा जाता है। मंदिर का वास्तु पर्शियन आर्किटेक्ट फरीबर्ज सहबा द्वारा तैयार किया गया था। दुनिया भर में आधुनिक वास्तु कला के नमूनों में से एक लोटस टेंपल भी है। इसका निर्माण बहा उल्लाह ने करवाया था, जो कि बहाई धर्म के संस्थापक थे। इसलिए इस मंदिर को बहाई मंदिर भी कहा जाता है। बावजूद इसके यह मंदिर किसी एक धर्म के दायरे में सिमटकर नहीं रह गया। यहां सभी धर्म के लोग आते हैं और शांति और सूकून का लाभ प्राप्त करते हैं। इसके निर्माण में करीब 1 करोड़ डॉलर की लागत आई थी। मंदिर आधे खिले कमल की आकृति में संगमरमर की 27 पंखुड़ियों से बनाया गया है, जो कि 3 चक्रों में व्यवस्थित हैं। मंदिर चारों ओर से 9 दरवाजों से घिरा है और बीचोंबीच एक बहुत बड़ा हॉल स्थित है। जिसकी ऊंचाई 40 मीटर है इस हॉल में करीब 2500 लोग एक साथ बैठ सकते हैं।

इस मंदिर कई खूबियों में से एक खूबी यह भी है कि यहां पर्यटकों के लिए धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने के लिए लाइब्रेरी और आडियो-विजुअल रूम बने हुए हैं। बहाई समुदाय के अनुसार, ईश्वर एक है और उसके रूप अनेक हो सकते हैं। वह मूर्ति पूजा को नहीं मानते हैं, लेकिन नाम कमल मंदिर है। फिर भी इसके अंदर अनुष्ठान करने की अनुमति नहीं है। वहीं, किसी भी धर्म-जाति के लोग कमल मंदिर में आ सकते हैं।

मंदिर में रोजाना कम से कम 10,000 लोग आते हैं, लेकिन मुख्य हॉल के विशाल शांतिपूर्ण अंदरूनी भाग के कारण यह जगह कभी भी भीड़-भाड़ वाली नहीं लगेगी। मुख्य प्रार्थना कक्ष में जाने के लिए नौ दरवाज़े हैं और अंदर आपको सिर्फ़ कुर्सियों की कतारें मिलेंगी, जिन पर लगभग 2,500 लोग बैठ सकते हैं और ईमानदारी से प्रार्थना कर सकते हैं। मंदिर में कदम रखने से पहले, अन्य पूजा स्थल की तरह, सभी जूते उतारने पड़ते हैं। कोई देवी, मूर्ति, प्रतीक या धार्मिक कलाकृतियाँ नहीं हैं जो यह संकेत दें कि यह पूजा का घर है। चर्च की तरह बैठने की व्यवस्था में केवल कतारों पर कतारें हैं, जहाँ श्रद्धालु चुपचाप बैठकर चिंतन और ध्यान कर सकते हैं। मंदिर सभी के लिए खुला है, चाहे उनका धर्म, लिंग, राष्ट्रीयता या कोई अन्य योग्यता कुछ भी हो, जिससे मानव जाति की एकता का परिचय मिलता है।

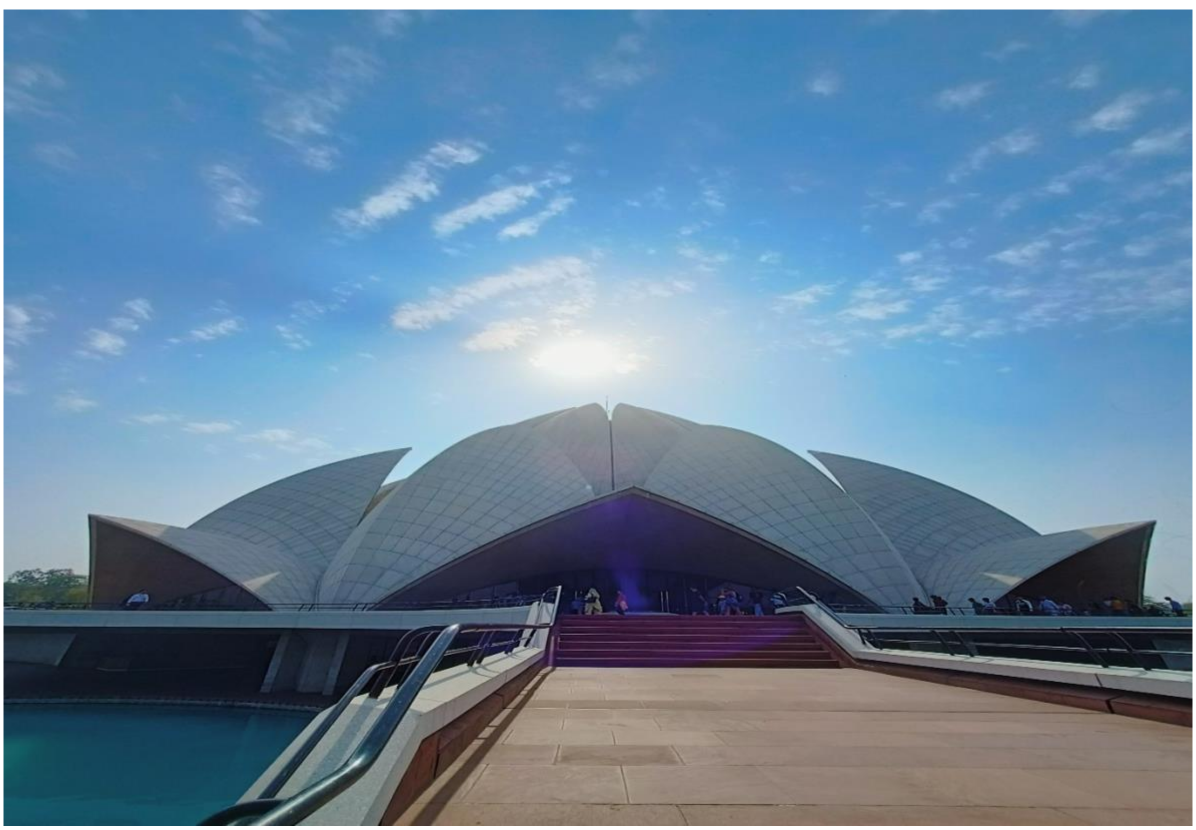

हुमायूं का मकबरा

जब बात मुगलों की आती है तो सबसे पहले हम ताजमहल या लाल किले को याद करने लगते हैं। लेकिन इन दोनों इमारतों के अलावा भी मुगलों ने कई दूसरी खूबसूरत चीज का भी निर्माण किया था, जिनमें मुगल बादशाह हुमायूं का मकबरा भी शामिल है।

हुमायूँ का मकबरा (मक़बरा ए हुमायूँ) दिल्ली, भारत में मुग़ल सम्राट हुमायूँ का मक़बरा है। इस कब्र को हुमायूँ की पहली पत्नी और मुख्य संरक्षक, एम्प्रेस बेगा बेगम (जिसे हाजी बेगम के नाम से भी जाना जाता है) द्वारा 1569-70 में बनाया गया था, और मिर्क मिर्ज़ा गियास और उनके बेटे, सय्यद मुहम्मद, द्वारा चुने गए फ़ारसी आर्किटेक्ट्स द्वारा डिज़ाइन किया गया था। यह भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान-मकबरा था, और निज़ामुद्दीन पूर्व, दिल्ली, भारत में स्थित है, जो दीना-पनाह गढ़ के करीब है, जिसे पुराण किला (पुराना किला) भी कहा जाता है, जिसे हुमायूँ ने 1533 में स्थापित किया था। यह भी था इस तरह के पैमाने पर लाल बलुआ पत्थर का उपयोग करने वाली पहली संरचना। 1993 में मकबरे को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

हुमायूं का मकबरा लगभग 8 वर्षों में बनकर तैयार हुआ था और इसके निर्माण में लगभग 1.5 मिलियन रुपए खर्च किए गए थे। एक फारसी वास्तुकार, मिराक मिर्जा घियाथ द्वारा डिजाइन किया गया, मकबरा आठ साइड वाले कक्षों की अवधारणा पर बनाया गया है, जिसे इस्लामी स्वर्ग अवधारणा से जोड़ा जाता है। इसके निर्माण के तुरंत बाद इस स्मारक को एक ऐतिहासिक स्मारक का दर्जा प्राप्त है।

हुमायूं के मकबरे तक की यात्रा में ईसा खान के मकबरे और मस्जिद की समानता है जो 20 साल पहले बनाई गई थी। ईसा खान शेरशाह सूरी के दरबार में एक आलीशान रथ था। यह मकबरा अष्टकोणीय मकबरा है जो अपनी आकर्षक वास्तुकला से कोई भी अपना दीवाना बना सकता है। इसमें छत वाली लैगरियां, चमकीली टाइलें और जालीदार जालियां इसकी सुंदरता को और अधिक बढ़ाती हैं। ईसा खान के मकबरे के बाहर एक सूचना बोर्ड लगा जिसे पढ़ने के बाद पता चला कि 20वीं सदी में यहां पूरा एक गांव था। चारों ओर बस हरियाली ही हरियाली परसारी हुई थी जो पूरे मसालों को चार-चाँद लगा रही थी।

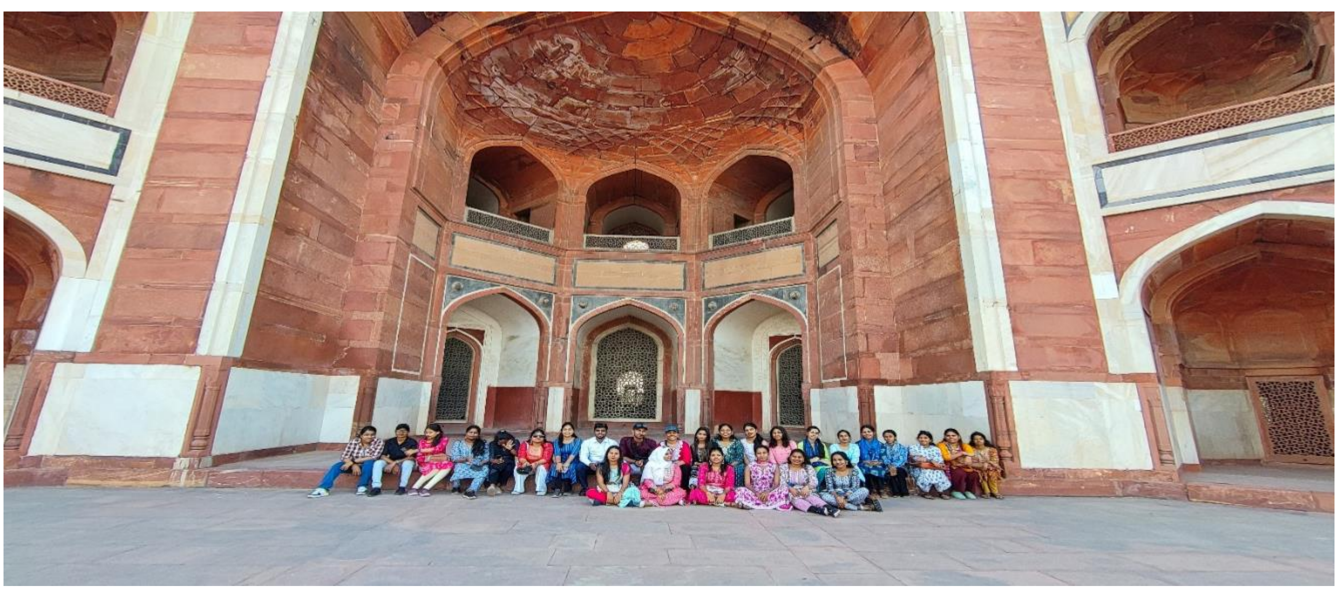

लक्ष्मी नारायण मंदिर बिड़ला मंदिर

लक्ष्मी नारायण मंदिर बिड़ला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। ये मंदिर लक्ष्मी नारायण को समर्पित है। साथ ही यहां पर वेंकटेश्वर, राधा कृष्ण, मां सरस्वती, श्री राम, शिव, सूर्य और श्री गणेश जैसे विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियां भी मौजूद हैं। यह दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह लक्ष्मी नारायण मंदिर बिरला श्रृंखला का सबसे पहला मंदिर है। अतः इसे बिरला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

लक्ष्मी नारायण मंदिर में नवरात्रि और दीपावली के समय भव्य आयोजन किया जाता है। साथ ही साथ यह मंदिर जन्माष्टमी के आयोजन के लिए भी प्रसिद्ध है। दीपावली पर इस मंदिर की साज सज्जा देखने लायक होती है। इस मंदिर के मुख्य बरामदे में लक्ष्मी नारायण की भव्य मूर्ति स्थापित है।लक्ष्मीनारायण मंदिर न केवल धार्मिक महत्व का स्थान है, बल्कि वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना भी है। मंदिर के डिजाइनर श्रीस चंद्र चटर्जी आधुनिक भारतीय वास्तुकला आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे। यह देश में एक बहुत ही दिलचस्प समय था। देश बड़े पैमाने पर स्वदेशी आंदोलन का गवाह बन रहा था। बिरला मंदिर की वास्तुकला उस समय की कहानी बयां करती है, जब इसका निर्माण किया गया था। बीसवीं सदी की शुरुआत का स्वदेशी आंदोलन मंदिर की वास्तुकला में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। स्मारक में बहुत सारे प्रामाणिक ग्रंथों का उपयोग किया गया है। चटर्जी अपनी आधुनिक मानसिकता के लिए जाने जाते थे। इस स्थान के धार्मिक और राष्ट्रीय महत्व को बरकरार रखते हुए, चटर्जी ने स्मारक बनाने के लिए आधुनिक तकनीकों और सामग्रियों का व्यापक रूप से उपयोग किया। बिरला मंदिर तीन मंजिला इमारत है और इसे मंदिर वास्तुकला की नागर शैली में बनाया गया है। मंदिर की दीवारों पर वर्तमान विश्व चक्र के स्वर्ण युग के दृश्य उकेरे गए हैं। आचार्य विश्वनाथ शास्त्री के कुशल नेतृत्व में बनारस के सैकड़ों कारीगरों ने मंदिर के चारों ओर मूर्तियों को उकेरने के लिए अपने कौशल का इस्तेमाल किया था। ये मूर्तियाँ जयपुर से मंगाए गए संगमरमर के पत्थर से बनी हैं। मंदिर में कोटा पत्थर

का काम भी है जिसे मकराना, आगरा, जैसलमेर और कोटा जैसे विभिन्न स्थानों से लाया गया था। मंदिर का सबसे बड़ा आकर्षण इसका शिखर है, जो गर्भगृह के ऊपर है। यह लगभग 160 फीट ऊँचा है। मंदिर पूर्व की ओर मुख किए हुए है और सूर्योदय के समय आश्चर्यजनक रूप से सुंदर दिखता है। यह एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है और कुछ भित्ति चित्रों से भी सुशोभित है। मंदिर के उत्तर की ओर स्थित गीता भवन भगवान कृष्ण को समर्पित है। मुख्य मंदिर के साथ भगवान शिव, बुद्ध और कृष्ण को समर्पित मंदिर भी हैं। मंदिर के अंदर मुख्य मंदिर में भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी विराजमान हैं। यह एक बहुत बड़ा हॉल है और सुबह और शाम की आरती के समय यहाँ बहुत से लोग आते हैं। भगवान शिव और भगवान कृष्ण के मंदिर भी पूरे साल बहुत से भक्तों को आकर्षित करते हैं। मंदिर के बाईं ओर शिखर पर शक्ति की प्रतीक देवी दुर्गा का मंदिर भी है। यह मंदिर नवरात्रि के दौरान एक विशेष आकर्षण होता है और पूरे शहर से लोगों को आकर्षित करता है।

लक्ष्मीनारायण मंदिर न केवल धार्मिक महत्व का स्थान है, बल्कि वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना भी है। मंदिर के डिजाइनर श्रीस चंद्र चटर्जी आधुनिक भारतीय वास्तुकला आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे। यह देश में एक बहुत ही दिलचस्प समय था। देश बड़े पैमाने पर स्वदेशी आंदोलन का गवाह बन रहा था। बिरला मंदिर की वास्तुकला उस समय की कहानी बयां करती है, जब इसका निर्माण किया गया था। बीसवीं सदी की शुरुआत का स्वदेशी आंदोलन मंदिर की वास्तुकला मे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। स्मारक में बहुत सारे प्रामाणिक ग्रंथों का उपयोग किया गया है। चटर्जी अपनी आधुनिक मानसिकता के लिए जाने जाते थे। इस स्थान के धार्मिक और राष्ट्रीय महत्व को बरकरार रखते हुए, चटर्जी ने स्मारक बनाने के लिए आधुनिक तकनीकों और सामग्रियों का व्यापक रूप से उपयोग किया। बिरला मंदिर तीन मंजिला इमारत है और इसे मंदिर वास्तुकला की नागर शैली में बनाया

गया है। मंदिर की दीवारों पर वर्तमान विश्व चक्र के स्वर्ण युग के दृश्य उकेरे गए हैं। आचार्य विश्वनाथ शास्त्री के कुशल नेतृत्व में बनारस के सैकड़ों कारीगरों ने मंदिर के चारों ओर मूर्तियों को उकेरने के लिए अपने कौशल का इस्तेमाल किया था। ये मूर्तियाँ जयपुर से मंगाए गए संगमरमर के पत्थर से बनी हैं। मंदिर में कोटा पत्थर का काम भी है जिसे मकराना, आगरा, जैसलमेर और कोटा जैसे विभिन्न स्थानों से लाया गया था। मंदिर का सबसे बड़ा आकर्षण इसका शिखर है, जो गर्भगृह के ऊपर है। यह लगभग 160 फीट ऊँचा है। मंदिर पूर्व की ओर मुख किए हुए है और सूर्योदय के समय आश्चर्यजनक रूप से सुंदर दिखता है। यह एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है और कुछ भित्ति चित्रों से भी सुशोभित है। मंदिर के उत्तर की ओर स्थित गीता भवन भगवान कृष्ण को समर्पित है। मुख्य मंदिर के साथ भगवान शिव, बुद्ध और कृष्ण को समर्पित मंदिर भी हैं। मंदिर के अंदर मुख्य मंदिर में भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी विराजमान हैं। यह एक बहुत बड़ा हॉल है और सुबह और शाम की आरती के समय यहाँ बहुत से लोग आते हैं। भगवान शिव और भगवान कृष्ण के मंदिर भी पूरे साल बहुत से भक्तों को आकर्षित करते हैं। मंदिर के बाईं ओर शिखर पर शक्ति की प्रतीक देवी दुर्गा का मंदिर भी है। यह मंदिर नवरात्रि के दौरान एक विशेष आकर्षण होता है और पूरे शहर से लोगों को आकर्षित करता ह

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय, जिसे दिल्ली यूनिवर्सिटी (युनिवर्सिटी ऑफ़ दिल्ली) के नाम से भी जाना जाता है, एक प्रसिद्ध केंद्रीय विश्वविद्यालय है जो भारत के दिल्ली शहर में स्थित है। यह 1922 में स्थापित किया गया था और यह भारत में सबसे बड़े और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक है। दिल्ली विश्वविद्यालय विभिन्न विषयों में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

यह विश्वविद्यालय अपनी शिक्षा की एक्सेलेंसी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और जीवंत कैंपस जीवन के लिए प्रसिद्ध है। इसमें दिल्ली शहर में कई कॉलेज़ शामिल हैं, जिनमें सेंट स्टीफन्स कॉलेज, लेडी श्री राम महिला कॉलेज, हिंदू कॉलेज, मिरांडा हाउस और कई और प्रमुख संस्थान शामिल हैं।

कला संकाय
दिल्ली विश्वविद्यालय
FACULTY OF ARTS
UNIVERSITY OF DELHI
GPS Map Camera
Delhi, Delhi, India
Delhi University Staff Flats, 29/31, Chhatra Marg, Art Faculty, University Enclave, Delhi, 110007, India
Lat 28.688893°
Long 77.20836°
22/03/24 11:48 AM GMT +05:30
Google

हिन्दू कॉलेज

दिल्ली विश्वविधालय के टॉप कॉलेजों में शामिल **'हिन्दू कॉलेज'** आर्ट्स और कॉमर्स विषयों की पढ़ाई के लिए देश के प्रमुख कॉलेजों में से एक माना जाता हैं। यहां हर साल देश-विदेश से 12वीं कक्षा के बाद लाखों स्टूडेंट्स अंडरग्रेजुएट और पोस्ट-अंडरग्रेजुएट कोर्सेज के लिए अप्लाई करते हैं। हिंदू कॉलेज एक ऐसा प्रसिद्ध कॉलेज है जहां से हमारे देश के बहुत से सुप्रसिद्ध हस्तियों ने अपनी ग्रेजुएशन कंप्लीट की हैं और देश-विदेश में भारत का नाम रौशन किया हैं।

सन 1899 में स्थापित, हिंदू कॉलेज का एक गौरवशाली अतीत है जो इसे देश और दिल्ली शहर से निकटता से जोड़ता है। हिंदू कॉलेज की स्थापना स्वर्गीय "श्री कृष्ण दासजी" ने सन् 1899 में की थी। सन 1922 में दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना के समय तक, हिन्दू कॉलेज अपनी सामान्य शुरुआत से विकसित हो चुका था।

दिल्ली विश्वविद्यालय के सबसे पुराने और पहले से ही प्रसिद्ध कॉलेजों में से एक के रूप में, हिंदू कॉलेज स्वतंत्र भारत के युग में छात्र बॉडी, टीचिंग स्टाफ और सुविधाओं के साथ स्थापित हुआ था। जो इसकी स्थापना के बाद से लगातार बढ़े हैं।सन 1953 में, अपने कश्मीरी गेट परिसर की क्षमताओं से परे विकसित होने के बाद, हिन्दू कॉलेज विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर के बीच में अपने वर्तमान स्थान पर स्थापित हुआ। विश्वविद्यालय की चार शोध-पत्रिकाएँ निकाली गई हैं जो भारत और शैक्षणिक में उच्च स्टार्टअप जगत में देखी जाती हैं। इनमें से एक है रिसर्च-पत्रिका स्टडीज इन क्रॉनिकल्स, इंटरनेशनल स्टडीज, जेएसएल (भाषा,साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान की रिसर्च-पत्रिका,) और हिसाडनिक होराइजन्स। उल्कापिंड के कई प्रतिभाशाली-सदस्य ऊचा चार के अलावा कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रेस्तरां का संपादन भी करते हैं। अपने विकास के इस चरण के दौरान, कॉलेज ने सस्ती और वैचारिक रूप से निहित शिक्षा पर अपना ध्यान केंद्रित किया। गंभीर वित्तीय संकटों के बावजूद, फीस कम रही और इसके संस्थापक लाला कृष्ण दासजी ने इसके रखरखाव के लिए नियमित रूप से दान दिया, जो अंततः 45,000 रुपये तक पहुंच गया: यह नवजात कॉलेज के भविष्य के प्रति उनके विश्वास और प्रतिबद्धता का एक व्यक्तिगत प्रमाण है। कर्मचारियों ने भी सामूहिक कार्य दान और आत्म-बलिदान की राष्ट्रवादी भावना को प्रदर्शित किया, जब तक कॉलेज मुश्किलों में था, तब तक उन्होंने अपना वेतन लेने से इनकार कर दिया और दान इकट्ठा करने के लिए घरघर अभियान चलाया।

GPS Map Camera
Delhi, Delhi, India
M6M6+C8W, Hindu College, University Enclave, Delhi, 110007, India
Lat 28.683889°
Long 77.21079°
22/03/24 12:18 PM GMT +05:30
Google

SANGANERIA AUDITORIUM
In the Fond Memory of
GPS Map Camera
Delhi, Delhi, India
M6M6+PCJ, Sudhir Bose Marg, Hindu College, University Enclave, Delhi, 110007, India
Lat 28.684444°
Long 77.21107°
22/03/24 12:30 PM GMT +05:30
Google

HINDU COLLEGE

<u>जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय</u>

मशहुर नेहरू विश्वविद्यालय ने दुनिया भर में शोध प्रबंधों, सम्मेलनों और प्रकाशनों के साथ मिलकर काम किया है। विश्वविद्यालय ने अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ सहमति-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं और उनके साथ नियमित रूप से इलेक्ट्रानिक-सदस्यों और छात्रों की भागीदारी-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यहां कुछ अंतरराष्ट्रीय डिग्री सेल्सियस के भारतीय पाठ्यक्रम (इंडियन क्लास) भी संचालित किये जाते हैं।

सेंट्रल लाइब्रेरी, कार्यशाला देश के सबसे आधुनिक एवं सुविधाओं से युक्त विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में से एक है जो कि छात्र, एवं प्रयोगशाला संकाय के सदस्यों की जानकारी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। यह एक नौ मंज़िला इमारत है और इसका चित्र करीब एक लाख स्क्वायर फ़ीट है।

यह विश्वविद्यालय के शैक्षणिक क्षेत्र के बीच समुद्र तट पर स्थित है और हर प्रकार की शैक्षणिक गतिविधि का केंद्र है। हर पैट हॉल एयर कंडीशन है। सम्पूर्ण लाइब्रेरी लेन एवं चाकलेट के माध्यम से जुड़ी हुई है। विश्वविद्यालय का हर विद्यालय, केंद्र एवं विश्वविद्यालय कार्यालय की लाइब्रेरी डेटा सर्वर से हटा दिया गया है।

पूरे साल में पुस्तकालय और परीक्षा के कुछ दिनों में सुबह 9 बजे से रात 8 बजे तक खुला रहता है, और यह हर साल में 45 दिनों के लिए रात 12 बजे तक खुला रहता है। हालाँकि पाठ्यपुस्तक कक्ष एवं पाठ्यपुस्तक खंड रविवार के अलावा पूरे वर्ष रात 12 बजे तक खुले रहते हैं। सामान्य पैड हॉल पूरे वर्ष 24 घंटे खुला रहता है। यह तीन राष्ट्रीय छुट्टियाँ और होली के त्योहार के दौरान बंद रहता है।राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) में छात्र संघ (Student Union) चुनाव में शुक्रवार को 73 फीसदी वोटिंग हुई, जो पिछले 12 सालों में सबसे ज्यादा है।

GPS Map Camera
Delhi, Delhi, India
M6M6+PCJ, Sudhir Bose Marg, Hindu College, University Enclave, Delhi, 110007, India
Lat 28.684447°
Long 77.211079°
22/03/24 04:27 PM GMT +05:30
Google

कुतुब मीनार

13वीं सदी की शुरुआत में दिल्ली से कुछ किलोमीटर दक्षिण में निर्मित, कुतुब मीनार की लाल बलुआ पत्थर की मीनार 72.5 मीटर ऊंची है, जो अपने शिखर पर 2.75 मीटर व्यास से लेकर आधार पर 14.32 मीटर तक पतली है, और बारी-बारी से कोणीय और गोल फ़्लूटिंग करती है। आसपास के पुरातात्विक क्षेत्र में अंत्येष्टि भवन हैं, विशेष रूप से शानदार अलाई-दरवाजा गेट, जो इंडो-मुस्लिम कला की उत्कृष्ट कृति है (1311 में निर्मित), और दो मस्जिदें, जिनमें कुव्वतुल-इस्लाम भी शामिल है, जो उत्तरी भारत में सबसे पुरानी है, जो साम कुतुब मीनार परिसर में मस्जिदों, मीनारों और अन्य संरचनाओं का समूह 12वीं शताब्दी में पहली बार भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी शक्ति स्थापित करने के बाद इस्लामी शासकों की वास्तुकला और कलात्मक उपलब्धियों का एक उत्कृष्ट प्रमाण है। नई दिल्ली के दक्षिणी किनारे पर स्थित यह परिसर, विशिष्ट भवन प्रकारों और रूपों की शुरूआत के साथ भारत को दार-अल-हर्ब से दार-अल-इस्लाम में बदलने की नए शासकों की आकांक्षा को दर्शाता है।

कुतुब मस्जिद के रूप में संदर्भित, कुव्वतुल-इस्लाम, जिसका अर्थ है इस्लाम की ताकत, ने भारत को इस्लामी वास्तुकला का क्लासिक मॉडल पेश किया जो पश्चिमी एशिया में विकसित हुआ था। मस्जिद में एक बड़ा आयताकार प्रांगण था जो तीन तरफ नक्काशीदार स्तंभों से घिरा हुआ था और पश्चिम में एक भव्य पांच-मेहराबदार स्क्रीन थी। हिंदू और जैन मंदिरों की विशेषताओं जैसे नक्काशीदार स्तंभों और आवरण विशेषताओं को शामिल करते हुए, इसे बाद के शासकों - कुतुब उद दीन ऐबक और शमसुद-दीन इल्तुतमिश द्वारा पूरा किया गया। अपनी घुरिद मातृभूमि से संदर्भ लेते हुए, उन्होंने 1199 और 1503 के बीच कुव्वातुल-इस्लाम के दक्षिण-पूर्वी कोने पर एक मीनार (मीनार) का निर्माण किया, जिससे एक विशिष्ट क्लासिक इस्लामी मस्जिद की शब्दावली पूरी हुई। लाल और भूरे बलुआ पत्थर से निर्मित और शिलालेखीय पट्टियों के साथ शानदार ढंग से नक्काशी की गई, कुतुब मीनार भारत की सबसे ऊंची चिनाई वाली मीनार है, जिसकी ऊंचाई 72.5 मीटर है, जिसमें सभी मुअद्दिन को प्रार्थना के लिए बुलाने के लिए उभरी हुई बालकनियाँ हैं। प्रांगण में एक लोहे का स्तंभ मस्जिद को एक अद्वितीय भारतीय सौंदर्य प्रदान करता है।

कुव्वतुल-इस्लाम के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में इल्तुतमिश का 13वीं शताब्दी का वर्गाकार मकबरा शाही कब्रों के निर्माण की परंपरा की शुरुआत का प्रतीक है, यह प्रथा भारत में मुगल काल के बाद

से चली आ रही थी। कब्र-कक्ष में सारासेनिक परंपरा से जुड़े शिलालेखों और ज्यामितीय और अरबी पैटर्न की प्रचुरता से नक्काशी की गई है। 1296 और 1311 के बीच अलाउद्दीन खिलजी द्वारा मौजूदा समूह में किया गया विस्तार राजा की शक्ति को दर्शाता है। अपने छोटे शासनकाल में, सम्राट ने कुतुब मीनार के दक्षिण में एक विशाल औपचारिक प्रवेश द्वार (अलाई दरवाजा) बनवाया, और एक मदरसा (शिक्षा का स्थान) भी बनवाया। अधूरी अलाई मीनार की पहली मंजिल, जिसे कुतुब मीनार के पैमाने से दोगुना माना जाता था, 25 मीटर ऊंची है।

कुतुब मीनार भारतीय और इस्लामी वास्तुकला के मिश्रण को भी दर्शाती है और इसलिए यह पहली शानदार संरचना है जिसे बनाया गया और सभी को पता है। चूंकि इसे सुल्तानों की तीन पीढ़ियों ने बनवाया था, इसलिए यह स्पष्ट रूप से उन स्पष्ट शैलियों का वर्णन करता है जिनका उपयोग गुलाम वंश से लेकर तुगलक युग तक उनके संबंधित शासकों द्वारा निर्मित विभिन्न मंजिलों पर किया गया था। टॉवर में कई गोल आकार के पतले शाफ्ट हैं जो छोटी बालकनियों द्वारा सीमांकित हैं जो जटिल डिज़ाइन के साथ दिखाई देते हैं। पहली मंजिल पर गोलाकार और नुकीले सजावटी खांचे हैं जबकि दूसरी और तीसरी मंजिल पर तारे के आकार के सजावटी खांचे हैं। मीनार पर जटिल डिजाइन और पवित्र पुस्तक 'कुरान' की आयतें उकेरी गई हैं। मीनार पर एक अजीबोगरीब रेखा भी है जिसे किसी हिंदू शिल्पकार ने इस मीनार पर काम करते समय उकेरा होगा। इसमें लिखा है कि मीनार की कल्पना विश्वकर्मा की कृपा से की गई थी, शायद इस तथ्य का जिक्र करते हुए कि इस मीनार का हर इंच पवित्र प्राचीन मंदिरों के पत्थरों से जड़ा हुआ है।

<u>ताजमहल</u>

आगरा भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित एक मशहूर शहर है। यह शहर अपनी ऐतिहासिकता, संस्कृति और प्रमुख पर्यटन स्थलों के लिए विख्यात है। आगरा मुग़ल सम्राट अकबर और उसके बादशाह जहांगीर और शाहजहां के समय मुग़ल साम्राज्य की राजधानी रहा है.ताजमहल उत्तर प्रदेश का एक मशहूर मकबरा है। यह विश्व धरोहर स्थल के रूप में यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त है। ताजमहल विश्व प्रसिद्धता के लिए जाना जाता है। यह भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। यह मकबरा मुग़ल सम्राट शाहजहां की पत्नी मुमताज़ महल की याद में बनाया गया था।

ताजमहल का निर्माण सन् 1632 से 1653 तक चला और इसे उस समय के अद्वितीय मुग़ल वास्तुकला का उदाहरण माना जाता है। यह लाल किले के समीप यमुना नदी के किनारे स्थित है। ताजमहल का निर्माण उस समय शाहजहां द्वारा शुरू किया गया था, जब उनकी पत्नी मुमताज़ महल ने अपनी मृत्यु के पश्चात उनसे एक वादा किया था कि उसकी याद में दुनिया का सबसे सुंदर मकबरा बनाया जाए। ताजमहल के निर्माण में लाल पत्थर, सफेद मार्बल, पीतल, सोना, नीलम, मोती, मकरानी पत्थर और अन्य रत्नों का उपयोग किया गया है।

ताजमहल की सुंदरता उसके विस्तृत मकबरा के साथ ही उसकी वास्तुकला, विशालता और सुंदर नक्काशी में छिपी है। यह उच्च कला की एक अद्वितीय उपलब्धि है और संस्कृति, ऐतिहासिकता और प्रेम का प्रतीक माना जाता है इसकी आकृति, आदर्श तरीके से प्रतिबिंबित विन्यास और ज्योतिर्मय चतुर्भुज संरचना इसे एक महान आर्किटेक्चरल श्रृंगार के रूप में प्रमुख बनाती है। ताजमहल एक सुंदर आकर्षण है और यहां हर साल लाखों पर्यटक आते हैं ताकि वे इस महान इतिहासिक मकबरे की सुंदरता और महत्त्व का आनंद ले सकें।

ताजमहल के निर्माण में कुल मिलाकर लगभग 22 साल का समय लगा था ।निर्माण का कार्य 1632 ईस्वी में शुरू हुआ और 1653 ईस्वी में पूरा हुआ. इसके दौरान लगभग 20,000 मजदूरों, शिल्पकारों, वास्तुकारों और कारीगरों का योगदान था। यह लंबे समय तक मेहनतपूर्वक और मेहनत से बनाया गया है, जो इसे एक आदर्श आर्किटेक्चरल मास्टरपीस बनाता है।

ताजमहल का पूरा नाम “दिवान-इ-खास-इ-ख़ुसरो” है.इसे अंग्रेजी में “Taj Mahal” के नाम से भी जाना जाता है। “ताज” का अर्थ है “ताजमहल” और “महल” का अर्थ है “मकबरा” या “महल”।इसका अर्थ होता है “ताज का मकबरा” या “ताज का महल”. यह भारत की प्रमुख धरोहर स्थलों में से एक है और विश्व की अद्भुततम आर्किटेक्चरल श्रृंगार के रूप में माना जाता है।

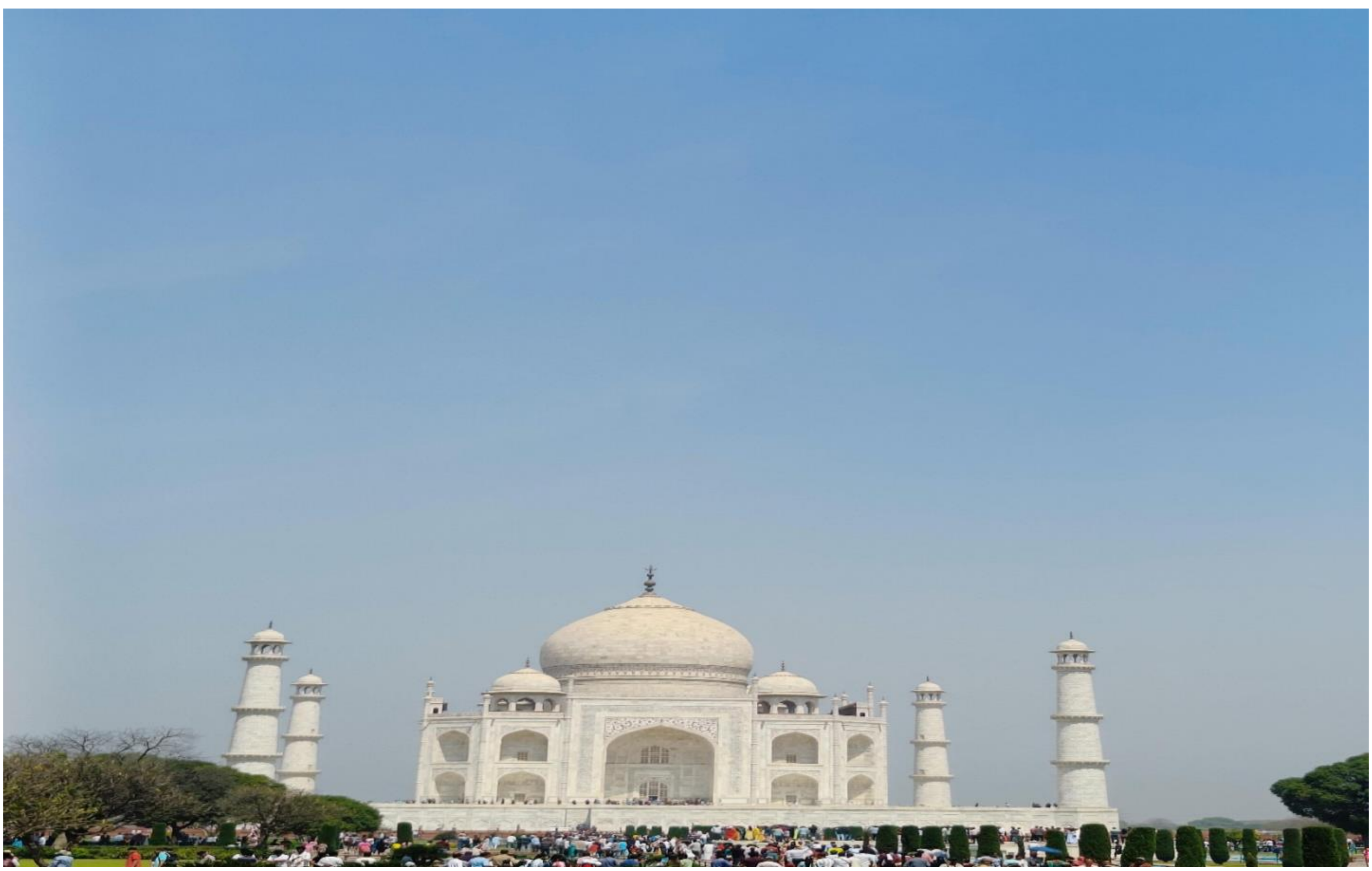

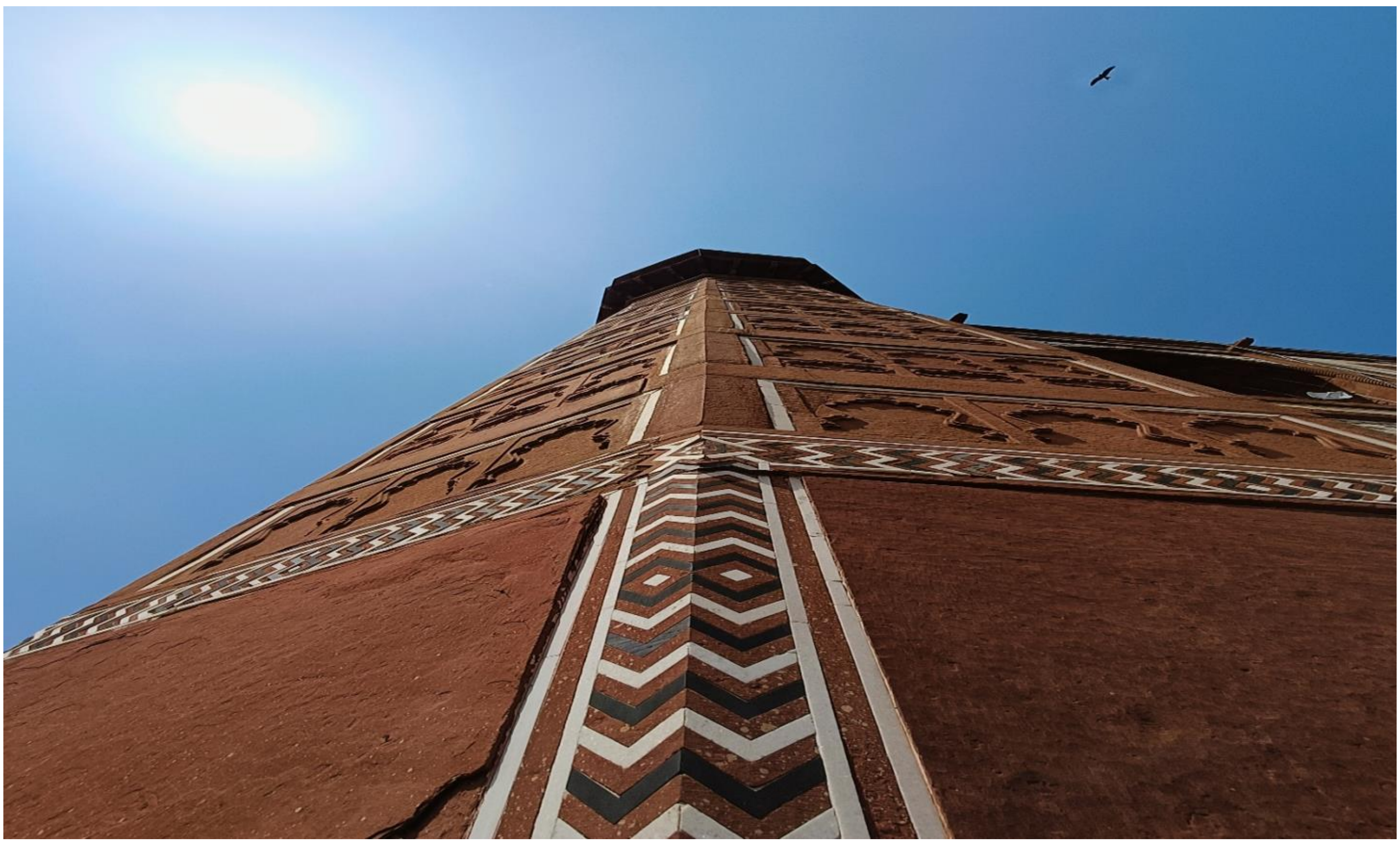

श्री कृष्ण जन्मभूमि “मथुरा”

मथुरा में कृष्ण जन्माथन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वह जगह है जहां भगवान श्री कृष्ण ने क्रूर राजा कंस के जेल हाउस में खुद को प्रकट किया और अपने पिता वासुदेव और उनकी मां देवकी को मुक्त कर दिया। उनका उद्देश्य बुराई को नष्ट करना, पुण्य की रक्षा करना और दृढ़ पैर पर धार्मिकता स्थापित करना था। जेल सेल के प्रवेश द्वार के निकट, मंदिर खड़ा है जहां अस्थभुजा मां योगमय प्रकट हुआ। पवित्र अभयारण्य का दिव्य वातावरण भक्तों के दिल को जैसे ही वे शुभ स्थान में प्रवेश करते और दृढ़ता की भावना उनके दिमाग में बढ़ जाती है कि यह वास्तव में वह स्थान है जहां भगवान कृष्ण ने खुद को प्रकट किया था। उन्होंने मानव जाति को असाधारण और सोचा पवित्रशास्त्र, भगवता गीता में विचारों को उत्तेजित किया।

माना जाता है कि कृष्ण जन्मस्थान मंदिर के गर्भग्रह में भगवान कृष्ण की चार मीटर ऊंची, सोने की एक मूर्ति थी जिसे महमूद गज़नी ने आक्रमण के दौरान चुरा लिया गया था।

कृष्ण जन्मस्थान मंदिर का निर्माण सबसे पहले भगवान कृष्ण के पौत्र वज्रनाभ ने करवाया था। पौराणिक समय की एक शिला लेख से यह भी पता चलता है कि वसु नाम के एक भक्त ने यहाँ मंदिर, तोरण द्वार और वेदिका का निर्माण करवाया था। मुग़ल शासकों मुहम्मद गजनवी, सिकंदर लोधी और जहाँगीर द्वारा इस भव्य मंदिर को नष्ट किया गया था लेकिन श्री कृष्ण के भक्तों द्वारा हर बार इसे और सुंदर ढ़ंग से पुनःनिर्मित किया गया। अभी हाल ही में मंदिर का परिसर और कारागार श्री कृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट द्वारा बनवाया गया है।

होली का त्योहार एक जीवंत उत्सव है और इसकी धूम पूरे देश में देखने को मिलती है, लेकिन मथुरा की होली यदि किसी ने एक बार देख ली तो वह जीवन भर नहीं भूल पाता है। यही कारण है कि होली का पर्व मनाने के लिए देशभर से लोग मथुरा या वृंदावन पहुंचते हैं।

वृन्दावन में होली का उत्सव भगवान कृष्ण का सम्मान में मनाया जाता है। इस दौरान यहां लठमार होली, फूलों की होली, विधवा होली और रास-लीला जैसे विभिन्न रीति-रिवाज संपन्न होते हैं।

श्रीगोविन्द द्वार
GATE No 3
श्रीकृष्ण

वृन्दावन कृष्ण मंदिर

वृन्दाव, भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के मथुरा ज़िले में स्थित एक महत्वपूर्ण धार्मिक व ऐतिहासिक नगर है। वृन्दावन भगवान श्रीकृष्ण की लीला से जुडा हुआ है। यह स्थान श्री कृष्ण की कुछ अलौकिक बाल लीलाओं का केन्द्र माना जाता है। यहाँ विशाल संख्या में श्री कृष्ण और राधा रानी के मन्दिर हैं । बांके विहारी जी का मंदिर, श्री गरुड़ गोविंद जी का मंदिर व राधावल्लभ लाल जी का, ठा.श्री पर्यावरण बिहारी जी का मंदिर बड़े प्राचीन हैं । इसके अतिरिक्त यहाँ श्री राधारमण, श्री राधा दामोदर, राधा श्याम सुंदर, गोपीनाथ, गोकुलेश, श्री कृष्ण बलराम मन्दिर, पागलबाबा का मंदिर, रंगनाथ जी का मंदिर, प्रेम मंदिर, श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, अक्षय पात्र, वैष्णो देवी मंदिर। निधि वन ,श्री रामबाग मन्दिर आदि भी दर्शनीय स्थान है।

यह कृष्ण की लीलास्थली है। हरिवंशपुराण, श्रीमद्भागवत, विष्णु पुराण आदि में वृन्दावन की महिमा का वर्णन किया गया है। कालिदास ने इसका उल्लेख रघुवंश में इंदुमती-स्वयंवर के प्रसंग में शूरसेनाधिपति सुषेण का परिचय देते हुए किया है इससे कालिदास के समय में वृन्दावन के मनोहारी उद्यानों के अस्तित्व का भान होता है। श्रीमद्भागवत के अनुसार गोकुल से कंस के अत्याचार से बचने के लिए नंदजी कुटुंबियों और सजातीयों के साथ वृन्दावन में निवास के लिए आये थे। विष्णु पुराण में इसी प्रसंग का उल्लेख है। विष्णुपुराण में भी वृन्दावन में कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है।

वर्तमान में टटिया स्थान, निधिवन, सेवाकुंज, मदनटेर, बिहारी जी की बगीची, रामबाग, लता भवन (प्राचीन नाम टेहरी वाला बगीचा) आरक्षित वनी के रूप में दर्शनीय हैं। निधि वन श्री बांके बिहारी जी मन्दिर से करीब में ही है। यहां की मान्यता है कि यहीं भगवान कृष्ण गोपियों संग रास रचाते थे।लोक किंवदंती है कि आज भी रात में रास रचाते हैं।

प्राचीन वृन्दावन

कहते है कि वर्तमान वृन्दावन असली या प्राचीन वृन्दावन नहीं है। श्रीमद्भागवत के वर्णन तथा अन्य उल्लेखों से जान पड़ता है कि प्राचीन वृन्दावन तो गोवर्धन के निकट कहीं था। यह तब गोवर्धन-धारण की प्रसिद्ध कथा की स्थली वृन्दावन पारसौली (परम रासस्थली) के निकट था।

अष्टछाप कवि महाकवि सूरदास इसी ग्राम में दीर्घकाल तक रहे थे। सूरदास जी ने वृन्दावन रज की महिमा के वशीभूत होकर गाया है-हम ना भई वृन्दावन रेणु।

ब्रज का हृदय

वृन्दावन को 'ब्रज का हृदय' कहते है जहाँ श्री राधाकृष्ण ने अपनी दिव्य लीलाएँ की हैं। इस पावन भूमि को पृथ्वी का अति उत्तम तथा परम गुप्त भाग कहा गया है। पद्म पुराण में इसे भगवान का साक्षात शरीर, पूर्ण ब्रह्म से सम्पर्क का स्थान तथा सुख का आश्रय बताया गया है। इसी कारण से यह अनादि काल से भक्तों की श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। चैतन्य महाप्रभु, स्वामी हरिदास, श्री हितहरिवंश, महाप्रभु वल्लभाचार्य आदि अनेक गोस्वामी भक्तों ने इसके वैभव को सजाने और संसार को अनश्वर सम्पति के रूप में प्रस्तुत करने में जीवन लगाया है। यहाँ आनन्दप्रद युगलकिशोर श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा की अद्भुत नित्य विहार लीला होती रहती है

उग्रसेन की बावड़ी

दिल्ली असंख्य विरासत संरचनाओं वाला शहर है, जहां के अतीत से हर कोई ज्यादा वाकिफ नहीं है। लेकिन इस शहर में एक ऐसी जगह है, जिसके बारे में शायद ही कोई इतना अच्छे से जानता होगा। अग्रसेन की बावड़ी ऐसी ही एक जगह है, जो अपने अनसुलझे राज के लिए जाना जाता है।

इसकी सुंदरता और देहाती आकर्षण लोगों को चौकने पर मजबूर कर देती है। साथ ही इसकी भूतिया कहानियों की वजह से भी यहां लोग सबसे ज्यादा आते हैं। अग्रसेन की बावली एक संरक्षित स्मारक है और भारत के दर्शनीय स्थलों में से एक है।

इसका निर्माण महाभारत की अवधि के दौरान किसी और ने नहीं बल्कि महाराजा अग्रसेन नामक अग्रोहा के महान राजा द्वारा किया था। बावड़ी या बावली का नाम उसी से लिया गया है। बाद में, 14 वीं शताब्दी में, इसे अग्रवाल समुदाय के लोगों द्वारा फिर से बनाया गया, जो महाराजा अग्रसेन के वंशज माने जाते हैं। बावड़ी की स्थापत्य विशेषताओं से यह भी संकेत मिलता है कि इसका पुनर्निर्माण तुगलक वंश (1321 -1414) या लोधी वंश (1451 से 1526) के दिल्ली पर शासन के दौरान किया गया था।

उग्रसेन की बावड़ी न केवल एक जलाशय के रूप में बल्कि एक सामुदायिक स्थान के रूप में भी काम करने के लिए बनाई गई थी। ऐसा माना जाता है कि उस समय की महिलाएं इस कुएं पर इकट्ठा होती थीं और बावली के शांत वातावरण ने उन्हें आराम करने और बाहर भीषण गर्मी से बचाने के लिए स्थापित किया गया था। बावली के धनुषाकार कक्षों का उपयोग विभिन्न धार्मिक कार्यों और समारोहों के लिए भी किया जाता था।

अग्रसेन की बावली, जिसकी लंबाई 60 मीटर और चौड़ाई 15 मीटर है, में एक अनूठी और अलंकृत स्थापत्य शैली मौजूद है। चट्टानों और पत्थरों का उपयोग करके पूरी संरचना मलबे की चिनाई से बनाई गई है। बावड़ी का आयताकार आकार इसे दिल्ली की अन्य बावड़ियों से अलग बनाता है जिन्हें गोल जलाशयों के रूप में बनाया गया था। अग्रसेन की बावली दिल्ली के उन कुछ बावड़ियों में से एक है, जहां एक ही सीढ़ी देखने को मिलती हैं।

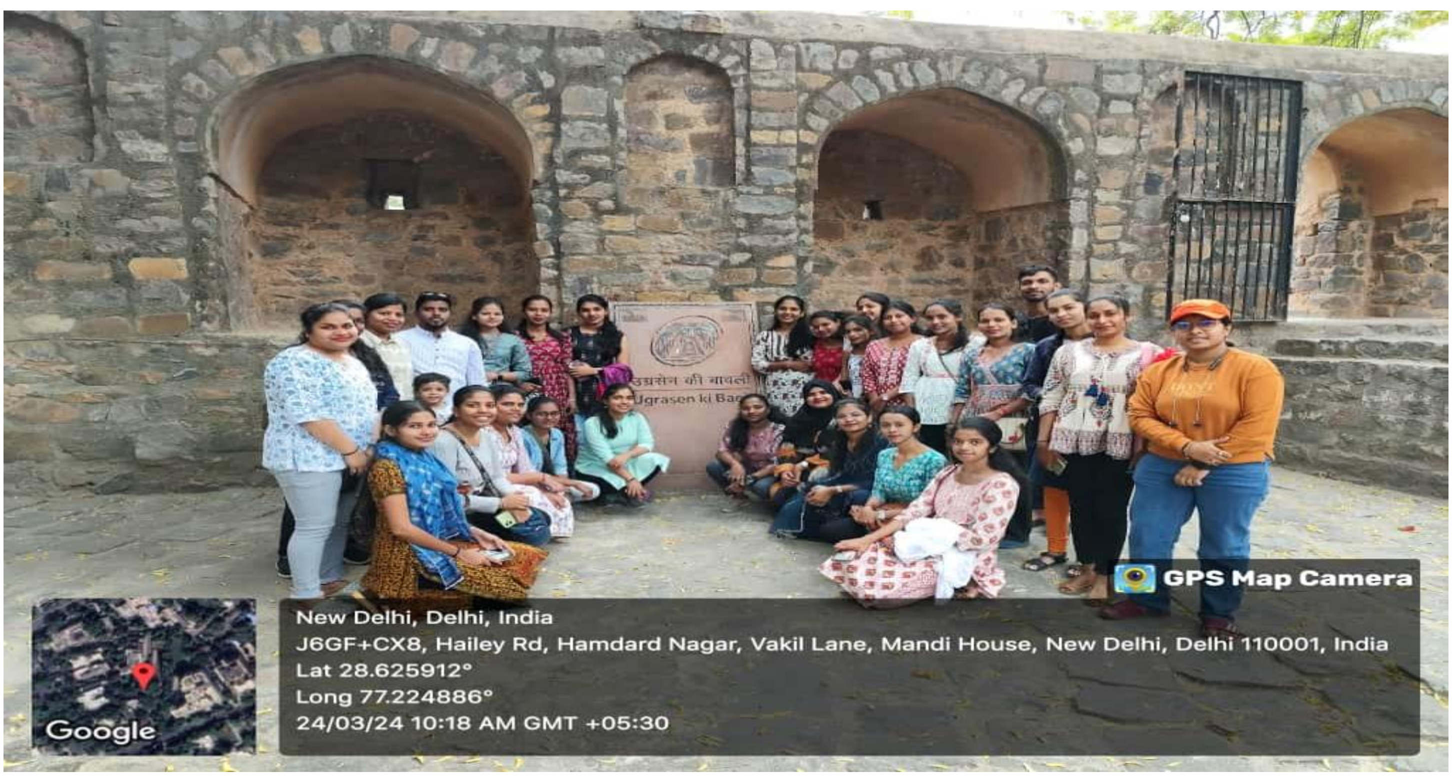
GPS Map Camera
New Delhi, Delhi, India
J6GF+CX8, Hailey Rd, Hamdard Nagar, Vakil Lane, Mandi House, New Delhi, Delhi 110001, India
Lat 28.625912°
Long 77.224886°
24/03/24 10:18 AM GMT +05:30
Google

राष्ट्रीय बाल भवन

राष्ट्रीय बाल भवन एक ऐसा संस्थान है जो बच्चों को उनकी आयु, रूचि एवं योग्यता के अनुसार उनके लिए विविध कार्यकलापों के आयोजन द्वारा विविध अवसर तथा विचार विमर्ष करने, सृजन करने तथा प्रदर्षन के लिए साझा मंच उपलब्ध करवाकर उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को तराषता है। यह बच्चों को किसी भी तनाव या दबाव से मुक्त, नई चीजें सीखने के लिए असीमित अवसरों सहित निर्बाधउन्मुक्त वातावरण उपलब्ध कराता है।

राष्ट्रीय बाल भवन बच्चों को उनके लिंग, जाति, धर्म, रंग आदि भेदभाव के बिना तनावमुक्त वातावरण में विभिन्न गतिविधियों में शामिल कर उनके समग्र विकास के लिए कार्यरत है। इनमें कुछ प्रमुख गतिविधियाँ हैं- क्ले माडलिंग, पेपर मैची, संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, हस्त शिल्पकला, संग्रहालय गतिविधि, फ़ोटोग्राफ़ी, वीडियोग्राफ़ी, इंडोर-आउटडोर खेल, गृह प्रबंधन, पारम्परिक कला, शैक्षिक और इन्नोवैटिव खेल/चेस, विज्ञान रोचक हैं इत्यादि। राष्ट्रीय बाल भवन के कुछ विशेष आकर्षण हैं- मिनी ट्रेन, मिनी ज़ू, फ़िश कार्नर, साइंस पार्क, फ़नी मिरर, कल्चर क्राफ़्ट विलेज। राष्ट्रीय बाल भवन में राष्ट्रीय प्रशिक्षण संसाधन केन्द्र (एनटीआरसी) है, जो विभिन्न गतिविधियों को प्रशिक्षित करता है। इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य और ध्यान बच्चों के सर्वागीण विकास और व्यक्तित्व विकास में अध्यापकों को प्रशिक्षित करना है, क्योंकि अध्यापक समुदाय बच्चों की सामाजिक आर्थिक, भावुक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों को समझने में कुशल होते हैं।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय बाल भवन कुछ स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम जैसे- कार्यशालाएँ, ट्रैकिंग कार्यक्रम, टाक शो, कैंप, आयोजित करता है। इसके अलावा पृथ्वी दिवस, पर्यावरण दिवस इत्यादि भी मनाता है। अंतर्राष्ट्रीय बाल सभा, युवा पर्यावरणविद सम्मेलन, सभी के लिए शिक्षा तथा अध्यक्षों और निदेशकों का अखिल भारतीय सम्मेलन मानव संसाधन और विकास मंत्रालय की देखरेख में आयोजित करता है। इन सबके अतिरिक्त राष्ट्रीय बाल भवन देश के विभिन्न भागों से अपने बच्चों को सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न देशों में भेजता है और ये बच्चे उप महाद्वीप की सामाजिक सांस्कृतिक विशिष्टता के युवा राजदूत के रूप में कार्य करते हैं। इसके साथ-साथ राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य बच्चे, देशभर में सम्बद्ध

बाल भवनों के बच्चे और राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य स्कूल/संस्थान भी वैश्विक समस्याओं के थीम पर अंतर्राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता में हिस्सा लेते हैं।

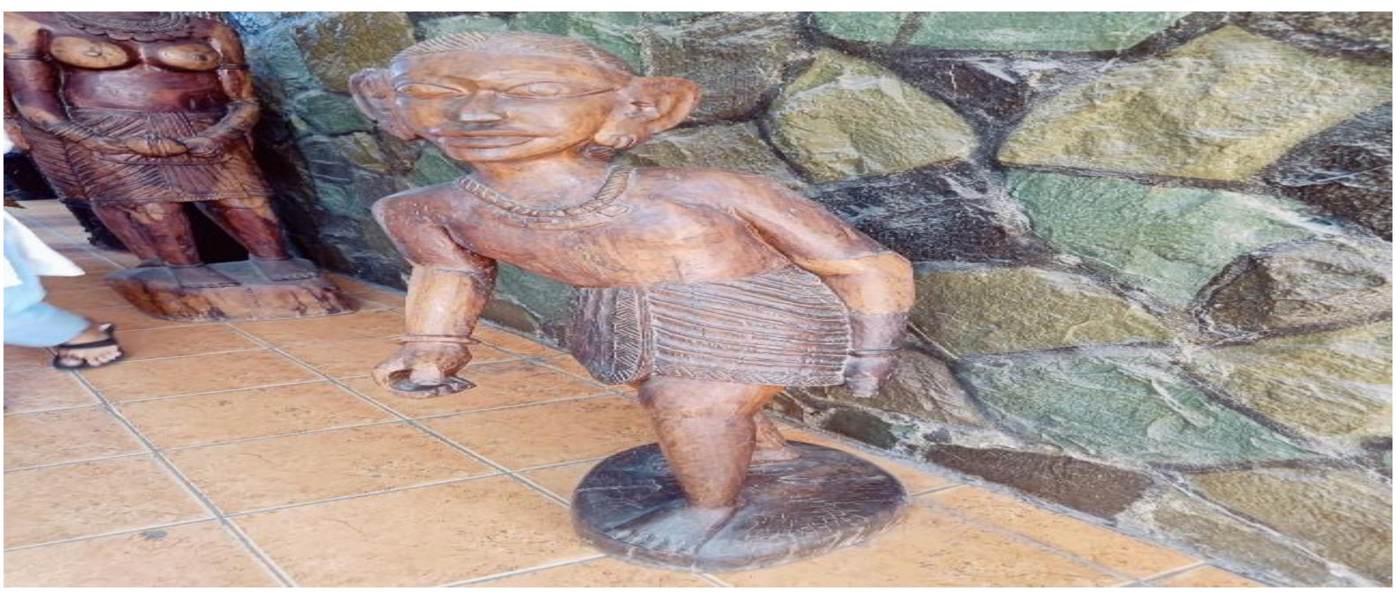

बच्चों द्वारा बनाई गई सृजनात्मक कलाकृतियां

<u>राज घाट</u>

राज घाट भारत की राजधानी **दिल्ली** में स्थित है। राज घाट को किसी विशेष प्रस्तावना की ज़रूरत नहीं है। यह **महात्मा गाँधी** का समाधि स्थल है जिसे **31 जनवरी** 1948 को उनकी हत्या के उपरान्त बनाया गया था। इस स्थान के महत्व का पता इस बात से चलता है कि भारत आये किसी भी प्रवासी प्रतिनिधि मण्डल को राजघाट आकर पुष्पाँजलि समर्पित करना और महत्मा गाँधी को सम्मान देना अनिवार्य रहता है। राज घाट **यमुना नदी** के किनारे महात्मा गाँधी मार्ग पर स्थित है।

स्मारक को वानु जी भुटा द्वारा डिज़ाइन किया गया है और स्थापत्य कला को दिवंगत नेता के अनुकरण में 'सरल' रखा गया है। हालाँकि निर्माण के उपरान्त स्मारक में कई बदलाव किये जा चुके हैं।

यह दिल्ली का सबसे लोकप्रिय आकर्षण है और प्रतिदिन हजारों पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है। यह स्मारक काले संगमरमर की बनी एक वर्गाकार संरचना है जिसके एक किनारे पर तांबे के कलश में लगातार एक मशाल जलती रहती है। इसके चारों ओर कंकड़युक्त फुटपाथ और हरे-भरे लॉन हैं और स्मारक पर 'हे राम' गुदा हुआ है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि महात्मा के ये अन्तिम शब्द थे। मृत्यु से पहले गांधीजी के अंतिम शब्द 'हे! राम' थे, जो उनकी समाधि पर अंकित हैं।

<u>गांधी दर्शन म्यूजियम</u>

दिल्ली, भारत की राष्ट्रीय राजधानी, न केवल इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर का केंद्र है. बल्कि यहां के संग्रहालयें भी विश्व भर से आने वाले पर्यटकों को अपनी अद्वितीयता से प्रभावित करते हैं. इनमें से एक गांधी दर्शन म्यूजियम है. जहां पर दुनिया का सबसे बड़ा फोटो एक्सबिशन होने के नाते प्रसिद्ध है, यहां पर 272 फोटो के द्वारा गांधी जी के पूरे जीवन को दर्शाया गया है. इसके अलावा, महात्मा गांधी के ऐतिहासिक वस्तु जैसे उनसे जुड़े नाव टेबल जीप आदि अभी भी हैं.गांधी जी जिस नाव से साबरमती नदी पार किए थे, वह नाव आज भी यहां मौजूद है. इसके अलावा, जिस जीप से गांधी जी का पार्थिव शरीर राजघाट लाया गया था वह जीप भी आज यहां मौजूद है.

मेरा जीवन ही मेरा संदेश शीर्षक की पहली दीर्घा में दीवारों पर सैकड़ों पुरालेखीय चित्र संक्षिप्त व्याख्याओं के साथ लगाए गए हैं। इनमें से कुछ तस्वीरों में एक बच्चे एवं एक युवा व्यक्ति के रूप में गांधी जी की दुर्लभ तस्वीरें हैं। एक अनुकृति उस घर की भी है जिसमें उनका जन्म हुआ था तथा सेना का वास्तविक वाहन भी है जिसमें उनके पार्थिव शरीर को अंत्सेष्टि स्थल तक ले जाया गया था, जिसे अब राजघाट के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, आगंतुक गांधी जी के स्कूल की रिपोर्ट कार्ड , अखबारों की कतरन तथा कार्टून जो समसामयिक रिपोर्ट एवं उनकी गतिविधियों की समीक्षाओं को प्रदर्शित करती हैं, पत्रों का आदान-प्रदान, उनकी पत्नी तथा बच्चों की तस्वीरों एवं अन्य दिलचस्प सामग्रियां भी देख सकते है। इस प्रदर्शनी में गांधी जी की हत्या के बाद दुनिया भर के देशों में आने वाले वर्षों में जारी किए गए स्मारक टिकटों को प्रदर्शित किया गया है; दूसरी प्रदर्शनी में पत्रों को प्रदर्शित किया गया है जो उन्हें भेजे गए थे।

विशेष रूप से ये पत्र दर्शाते हैं कि एक साधारण गुजराती वकील ने अपने जीवन काल में कितनी व्यापक प्रसिद्धि पाई। उदाहरण के लिए, एक पत्र 'गांधीजीः वे चाहे जहां भी हों' को संबोधित किया गया है; दूसरे पत्र मे जो न्यूयॉर्क से पोस्ट किया गया था लिफ़ाफ़ा पर केवल गांधी जी का रेखाचित्र यानि स्केच भर था। संक्षेप में, 274 पट्टिकाओं के साथ इस मंडप में निम्नलिखित हैंः

पट्टिका संख्या 1 से 273 में गांधी जी के जन्म से लेकर हत्या तक की तस्वीरें हैं, जिनकी संख्या लगभग 1600 हैं। पट्टिका संख्या 274 में महात्मा गांधी के जन्म शताब्दी वर्ष पर जारी की गई विभिन्न देशों के 75 टिकट हैं। नमक सत्याग्रह के दौरान उपयोग में लाई गई नौका एवं तख्ती तथा बंदूक वाहन जिसमें महात्मा गांधी के पार्थिव अवशेष को बिरला भवन से राजघाट तक ले जाया गया, भी यहां रखा गया है।

यहां पर अनुकृतियां हैः गुजरात के पोरबंदर में गांधी जी का घर, साबरमती आश्रम, यरवदा जेल। 1994 में, गांधी जी की 125वीं जन्म शताब्दी के दौरान, राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव ने औपचारिक रूप से राजघाट स्थित गांधी दर्शन में अंतरराष्ट्रीय गांधीवादी अध्ययन केंद्र की स्थापना करने की घोषणा की। 30 जनवरी, 2000 को राष्ट्रपति के. आरनारायणन ने प्रधानमंत्री तथा समिति के अध्यक्ष, श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं कई अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में परिसर में अंतरराष्ट्रीय गांधीवादी अध्ययन एवं शांति अनुसंधान केंद्र के स्थापना की घोषणा करते हुए एक स्तंभ का अनावरण किया।

जामा मस्जिद

जामा मस्जिद पुरानी दिल्ली में स्थित है, जिसका निर्माण 1650-56 में मुगल सम्राट शाहजहाँ ने कराया था, जो इस्लामी वास्तुकला के प्रसिद्ध संरक्षक थे, जिनका सबसे प्रसिद्ध कार्य आगरा में स्थित ताजमहल है। जामा मस्जिद, जो अब भारतीय उपमहाद्वीप की दूसरी सबसे बड़ी मस्जिद है, मुगल वास्तुकला का एक प्रभावशाली उदाहरण भी है। जामा मस्जिद दिल्ली की प्रमुख मस्जिद है, वह स्थान जहाँ शहर के मुसलमान पारंपरिक रूप से शुक्रवार की सामूहिक प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते हैं; जामा मस्जिद अरबी में "शुक्रवार की मस्जिद" के लिए है। मस्जिद लाल किले के पास है। इसका लंबा नाम, मस्जिद-ए-जहान जिसका अनुवाद "विश्व-प्रतिबिंबित मस्जिद" या "विश्व-प्रदर्शन मस्जिद" है। मस्जिद का निर्माण लगभग 5,000 श्रमिकों के दल द्वारा किया गया था। मुख्य निर्माण सामग्री लाल बलुआ पत्थर है, लेकिन कुछ सफेद संगमरमर का भी उपयोग किया गया था। जामा मस्जिद सऊदी अरब के पवित्र शहर मक्का की ओर उन्मुख है, जो पश्चिम में स्थित है। मस्जिद की इमारत के पूर्वी प्रवेश द्वार के सामने एक खुला प्रांगण है जो कम से कम 325 फीट (99 मीटर) वर्ग का है और इसमें 25,000 लोग बैठ सकते हैं। पूर्वी प्रवेश द्वार मूल रूप से शाही उपयोग के लिए आरक्षित था। दूसरों ने इमारत के उत्तर और दक्षिण की ओर छोटे द्वारों का उपयोग किया। इमारत के उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व कोनों को दो 130-फुट (40-मीटर) मीनारें चिह्नित करती हैं। सबसे बड़ा आंतरिक स्थान प्रार्थना कक्ष है, जो 90 × 200 फीट है। प्रार्थना कक्ष के प्रवेश द्वार के ऊपर फ़ारसी में सुलेखित शिलालेख हैं। प्रार्थना कक्ष की छत से तीन बड़े संगमरमर के गुंबद उठते हैं। 21वीं सदी में जामा मस्जिद में दो हिंसक घटनाएं हुईं, जो संभवतः आतंकवाद से जुड़ी थीं। 2006 में प्रांगण में छोड़े गए शॉपिंग बैग में रखे दो बमों के फटने से 13 लोग घायल हो गए थे और 2010 में मस्जिद के बाहर खड़ी एक पर्यटक बस पर बंदूकधारियों द्वारा किए गए हमले में दो लोग घायल हो गए थे। यहां मुगल वास्तुकला, भवन निर्माण शैली जो 16वीं सदी के मध्य से 17वीं सदी के अंत तक मुगल सम्राटों के संरक्षण में उत्तरी और मध्य भारत में फली-फूली है। मुगल काल ने उत्तरी भारत में इस्लामी वास्तुकला के एक उल्लेखनीय पुनरुद्धार को चिह्नित किया। मुगल सम्राटों के संरक्षण में, फारसी, भारतीय और विभिन्न प्रांतीय शैलियों को मिलाकर असामान्य गुणवत्ता और परिष्कार के कार्यों का निर्माण किया गया।

लाल किला

लाल किला इतिहास से भरा हुआ प्रसिद्ध स्मारक है जो भारतीय राजघराने की शानदार वास्तुकला का प्रतीक है। यह भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है और पुरानी दिल्ली के शाहजहां के शासनकाल में बनाया गया था. लाल किले का निर्माण 17वीं शताब्दी में मुघल शासक शाहजहां ने करवाया था ।इस किले का नाम इसके रेड स्टोन से बने हुए विशाल प्रांगण की वजह से पड़ा है .जिससे यह एक लाल रंग की जाती है। इसे उर्दू भाषा में "लाल" कहा जाता है, जिसका मतलब "लाल रंग का" होता है. लाल किले के दीवारों की चौड़ाई लगभग 2.4 किलोमीटर है और इसकी ऊंचाई 18 मीटर से 33 मीटर तक है। इसमें 2.5 किलोमीटर लंबा और 18 मीटर चौड़ा इलाका है जिसे "चोटीदार" कहते हैं।

लाल क़िला की निर्माण की शुरुआत शाहजहां नामक मुग़ल सम्राट ने 17वीं सदी में की थी. इसे बनाने का मुख्य उद्देश्य दिल्ली को राष्ट्रीय राजधानी बनाना था. इसके निर्माण में प्रयुक्त संरचना मुग़ल शैली को प्रतिष्ठित करती है. लाल क़िला का निर्माण 12 मई 1639 को पूर्ण हुआ और शाहजहां ने इसे अपने बेटे दारा शिकोह को उत्तराधिकारी के रूप में सौंपा गया था. लाल क़िला का आकार बड़ा और विशाल है। इसमें बहुत सारे भवन, मस्जिदें, बाग़, महल, और दरबार हैं. इसकी मुख्य दीवारें लाल रंग की हैं, जिससे इसे 'लाल क़िला' के नाम से पुकारा जाता है. इसमें छह प्रमुख दरवाज़े हैं - दिल्ली दरवाज़ा, लाहौर दरवाज़ा, अख़बर दरवाज़ा, बख़्शि दरवाज़ा, नोबेल दरवाज़ा, और हुमायूं दरवाज़ा. यह क़िला भारतीय इतिहास में कई महत्वपूर्ण घटनाओं के साक्षी रहा है. 15 अगस्त 1947 को भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के दिन, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यहां से पहले आज़ादी के ज़िक्र किया था. यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल है जो देश और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

दिल्ली के लाल किला में अब संग्रहालय हैं, जिनमें कई तरह की ऐतिहासिक कलाकृतियाँ प्रदर्शित हैं। इनमें सुभाष चंद्र बोस संग्रहालय, 1857 का संग्रहालय, याद-ए-जलियाँ, दृश्यकला और आज़ादी के दीवाने शामिल हैं। इमारत का मूल नाम किला-ए-मुबारक था।अंग्रेजों ने इसकी विशाल लाल बलुआ पत्थर की दीवारों के कारण इसे लाल किला नाम दिया, जबकि स्थानीय लोगों ने इसी कारण से इसका अनुवाद लाल किला कर दिया।

<u>सरोजिनी नगर</u>

सरोजिनी बाज़ार को दिल्ली के मूल निवासियों द्वारा सौदा बाज़ार और लोगों के बाज़ार के रूप में जाना जाता है। सरोजिनी नगर बाज़ार दिल्ली के सबसे लोकप्रिय बाज़ारों में से एक है और दिल्ली शहर के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। सरोजिनी नगर बाजार का नाम प्रसिद्ध महिला स्वतंत्रता सेनानी सरोजिनी नायडू के नाम पर रखा गया है और यह दिल्ली के सबसे पॉश इलाकों में से एक, सफदरजंग एन्क्लेव, साउथ एक्सटेंशन, लक्ष्मीबाई नगर, चाणक्यपुरी और नेताजी नगर से घिरा हुआ है। वस्तुओं की कीमतें वास्तव में नहीं बढ़ रही हैं। लेकिन व्यक्ति को सौदेबाजी के अपने कौशल को निखारना होगा और उसके बाद ही सौदेबाजी के लिए बाजार में उतरना होगा, जिससे यहां बेची जाने वाली वस्तुओं की दर को कम करने में मदद मिलेगी।

सरोजिनी नगर बाज़ार सभी नवीनतम और ट्रेंडी संग्रहों और वस्तुओं के लिए अपराजेय कीमतों का वादा करता है। यह सबसे ट्रेंडी और फैशन मार्केट में से एक है। सरोजिनी नगर बाजार आईएनए मेट्रो स्टेशन के बहुत करीब स्थित है और यहां से ऑटो रिक्शा द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है, जिसका अधिकतम किराया 30 रुपये होगा। यह बाजार सफदरजंग हवाई अड्डे के भी बहुत करीब है। यह बाज़ार महिलाओं की अधिक रुचि को पूरा करता है जैसे परिधान, बरतन, क्रॉकरी और कटलरी सहित। इस प्रकार बाज़ार वस्तुओं का विस्तृत प्रदर्शन प्रस्तुत करता है। सरोजिनी नगर बाज़ार सबसे अधिक प्रचलित बाज़ारों में से एक है और यह दिल्ली में विशेष रूप से महिलाओं की भीड़ के लिए फैशन को प्रभावित करता है।

मेरा अनुभव

भ्रमण के दौरान बहुत मज़ा किय। और बहुत ऐसे प्रसिद्ध जगहों पर गए जो कभी नहीं देखे थे। पर मुझे बहुत सारी चीजें जो है वो अच्छी नहीं लगी। पहले तो दिल्ली में मैंने बहुत जगहों पर दिखाए कि बच्चों को माँ बाप भीख मांगने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह दृश्य दुखकर मुझे बुरा लगा। जब हम जे.एन.यू जाने के लिए निकाले तो ट्रैफिक में बहुत सारे छोटे छोटे बच्चे थे जो गुलाब के गुच्छे बनाकर बेच रहे थे और उनको खरीदने के लिए वे भीख मांग रहे थे । इतने ज्यादा ट्रैफिक थी की गाड़ियों में दिखाई भी नहीं दे रहे। तो यह दृश्य देखकर मुझे बहुत दुख हुआ। पर और एक लड़की थी जो बीच सड़क में गाड़ियों को बीच सर्कस कर रही थी और भीख मांग रही थी। दिल्ली तो बहुत प्रसिद्ध है, लेकिन। यह, जो बच्चों के साथ अन्याय हो रहा है अत्याचार हो रहा है यह देखकर मुझे बहुत बुरा लगा। पेसै की लालच से यहाँ पर बच्चों के ऊपर हुए अत्याचार को देख कर मुझे बहुत बुरा लगा। थोड़ी जो चीजें हैं वो मुझे बहुत अच्छी लगी जैसे कि ,हम सोशल मीडिया और मोबाइल पर इतना मग्न हो जाते हैं कि हमें कुछ पता ही नहीं चलता और हम तस्वीरें खींचते ही वो दृश्य देखने के लिए भूल जाती है। लेकिन जब बहुत सारे ऐसी जगह थी जहाँ पर हम तस्वीरें खींचने के लिए मना कर दिया गया था, तब हम अपना पूरा तन मन लगाकर उस मंदिरों ,उस जगह को देख रहे थे। अगर वहाँ पर भी हमें मोबाइल लेने के लिए कोई पाबंदी नहीं की तो हम तस्वीरें खींचने के लिए ही समय बिताते वहाँ का दृश्य अपने मन में स्थिरता नहीं कर पाते । यह भी एक अनुभव मुझे मिला के बिना मोबाइल के भी हम रह सकते हैं और हम अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ऐसी अनेक चिजे थी जो मेरा सपना था कि वहा मैं पहुँच जाऊं और वो सपना पूरा हो गया। जैसे कि मुझे लग रहा था मैं मथुरा वृन्दावन कभी नहीं पहुंचूंगी पर जैसे। अचानक से वहाँ पहुँच गई और वो भी होली के दिनों मे । होली के दिन हम वहाँ पहुँच गए , यह हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। और भ्रमण से हमने बहुत सारी चीजे सीखे जो हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

सीखना और मनोरंजन हमेशा एक बेहतरीन संयोजन बनाते हैं। शैक्षिक यात्राएँ मज़ेदार मानी जाती हैं, लेकिन छात्र इनसे सीखते भी हैं। मंथन स्कूल, नोएडा विस्तार में एक प्राथमिक विद्यालय, बच्चों को मानक शैक्षिक वातावरण के बाहर अतिरिक्त सीखने के अवसर और अनुभव प्रदान करता है जो उनके विकास के विभिन्न पहलुओं को बढ़ाता है, उन्हें अपने समुदाय में शामिल करता है और नए विचारों की उनकी समझ विकसित करता है।

छात्रों को अपने विषय के नए पक्ष का अध्ययन करने के लिए कक्षा से बाहर ले जाने और गहरे संबंध और अधिक प्रेरणा के साथ लौटने का महत्व।शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए महत्वपूर्ण कड़ी है। ये भ्रमण विद्यार्थियों को अपने और दूसरों के अनुभव से सीखने का एक अच्छा अवसर देते हैं। जब विद्यार्थी शैक्षणिक भ्रमण पर जाते हैं तो वे अपनी आँखों से प्रत्यक्ष रूप में देखकर किसी भी विषयवस्तु का वर्णन करने में सक्षम हो जाते हैं। उनके भ्रम और मिथ्या धारणाएँ दूर होती हैं। इसीलिए का प्रत्येक विभाग अपने विद्यार्थी के लिए शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन करता है ताकि वे विविध जलवायु, वातावरण, विकास, इतिहास, संस्कृति, उद्योग जगत से वास्तविक रूप से अवगत हो सकें। विषय की प्रकृति के अनुसार सभी विभाग अपने-अपने विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन करते हैं। भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, हिंदी, कैमेस्ट्री विभाग समय-समय पर विद्यार्थियों को राजस्थान एवं भारत के विभिन्न शैक्षणिक स्थल पर ले जाते हैं।

छात्रों को नियमित आरंभ यात्रा पर ले जाया जाता है, जहां छात्र खुले वातावरण में शिक्षा को अपने व्यक्तिगत दीक्षांत समारोह से जोड़ते हैं। प्रकृति को व्यक्तिगत रूप से जाना जा सकता है, इसके अतिरिक्त छात्रों के समूह में रहने की प्रवृत्ति, नायक बनने की क्षमता और भाईचारे की भावना की प्रबलता होती है।